

वर्ष
2

मूल्य
300 रुपए
वार्षिक



अंक
30

संपादक
शेख मुजाहिद
अहमद

अखबार-ए-अहमदिया

रूहानी खलीफा इमाजत जमाअत अहमदिया हजरत मिर्जा मसरूर अहमद साहिब खलीफतुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अजीज सकुशल हैं। अलहमदोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुजूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

27 जुलाई 2017 ई.

3 ज़िलकअदा 1438 हिजरी कमरी

प्रियोजनो! यह धर्म के लिए और धर्म के उद्देश्यों के लिए सेवा का समय है।

इस समय को उपयोगी समझो कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा।

तुम अपने वह नमूने दिखलाओ कि फ़रिश्ते भी आसमान पर तुम्हारी सच्चाई तथा पवित्रता से हैरान हो जाएं और तुम पर दरूद भेजें।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हमारे इस युग में कुछ विशेष कुरीतियां हैं जिनमें स्त्रियां उलझी हुई हैं। वह एक से अधिक विवाह को नितान्त बुरी दृष्टि से देखती हैं या यों कहें कि वे उस पर ईमान नहीं रखतीं। उन्हें ज्ञात नहीं कि खुदा की शरीअत में हर प्रकार की चिकित्सा निहित है। अतः यदि इस्लाम में एक से अधिक विवाह का मामला न होता तो ऐसी परिस्थितियां जो मनुष्यों के लिए दूसरे विवाह हेतु विवश कर देती हैं, इस शरीअत में उनका कोई समाधान न होता। जैसे यदि स्त्री दीवानी या पागल हो जाए या कोढ़ी हो जाए या सदा के लिए किसी ऐसी बीमारी का शिकार हो जाए जो बेकार कर देती है अथवा कोई अन्य ऐसी परिस्थिति सामने आ जाए कि स्त्री दया की पात्र हो, परन्तु किसी लिहाज़ से असमर्थ हो जाए और पुरुष भी दया का पात्र, जब वह बिना विवाह के धैर्य न रख सके। तो ऐसी स्थिति में मनुष्य की शक्तियों पर अत्याचार है कि उसे दूसरे विवाह की अनुमति न दी जाए। वास्तव में खुदा की शरीअत ने इन्हीं मामलों पर दृष्टि रखते हुए पुरुषों के लिए यह मार्ग खुला रखा है और विवशता के समय स्त्रियों के लिए भी मार्ग खुला है कि यदि पुरुष बेकार हो जाए तो न्यायाधिकारी द्वारा खुला करा लें, जो तलाक के स्थान पर है। खुदा की शरीअत दवा बेचने वाले की दुकान की भांति है। यदि दुकान ऐसी नहीं है जिसमें से प्रत्येक रोग की दवा मिल सकती है तो वह दुकान चल नहीं सकती। अतः विचार करो कि क्या यह सत्य नहीं कि पुरुषों के सामने कुछ ऐसी समस्याएं आ जाती हैं जिनमें वह दूसरे विवाह के लिए विवश होते हैं। वह शरीअत किस काम की जिसमें समस्त समस्याओं का समाधान न हो। देखो इन्जील में तलाक के बारे में केवल व्यभिचार की शर्त थी। अन्य सैंकड़ों प्रकार के ऐसे कारण जो पुरुष और स्त्री में जान लेने वाली शत्रुता उत्पन्न कर देते हैं उनका कोई उल्लेख नहीं था। इसलिए ईसाई क्रौम इस दोष को सहन न कर सकी और अंततः अमरीका में एक तलाक का कानून बनाना पड़ा। अतः अब विचार करो कि इस कानून से इन्जील किधर गई। हे स्त्रियो चिन्ता न करो, तुम्हें जो पुस्तक मिली है उसमें इन्जील की भांति मनुष्यों की ओर से कुछ मिलाने की आवश्यकता नहीं। उस पुस्तक में जिस प्रकार पुरुषों के अधिकार सुरक्षित हैं स्त्रियों के अधिकार भी सुरक्षित हैं। यदि स्त्री, पुरुष के एक से अधिक विवाह पर नाराज़ है तो न्यायाधीश द्वारा खुला करा सकती है। खुदा का यह कर्तव्य था कि विभिन्न परिस्थितियां जो मुसलमानों के समक्ष आने वाली थीं, अपनी शरीअत में उनका उल्लेख कर देता ताकि शरीअत अपूर्ण न रहती। अतः हे स्त्रियो तुम अपने पतियों की उन इच्छाओं के समय कि वे दूसरा विवाह करना चाहते हैं खुदा की शिकायत मत करो बल्कि तुम प्रार्थना करो कि खुदा तुम्हें मुसीबत और परीक्षा की घड़ी से सुरक्षित रखे। निस्संदेह वह पुरुष नितान्त अत्याचारी एवं दण्डनीय है जो दो पत्नियों रख कर न्याय नहीं करता। परन्तु तुम स्वयं खुदा की अवज्ञा करके खुदा के प्रकोप की पात्र न बनो। प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी होगा। यदि तुम खुदा की दृष्टि में सुशील और नेक बनो तो तुम्हारा पति भी सुशील और नेक किया जाएगा। यद्यपि कि शरीअत ने विभिन्न दूरअंदेशियों

के कारण एक से अधिक विवाहों को वैध ठहराया है। परन्तु नियति का नियम तुम्हारे लिए खुला है। यदि शरीअत का कानून तुम्हारे लिए सहननीय नहीं तो प्रार्थना के माध्यम से नियति के कानून से लाभ उठाओ, क्योंकि नियति का कानून शरीअत के कानून पर भी विजयी हो जाता है। संयम को अपनाओ, संसार और उसके सौन्दर्य से बहुत हृदय मत लगाओ, वर्ण और जाति पर अभिमान मत करो, किसी स्त्री से हंसी-ठट्टा मत करो, पतियों से वह कुछ न मांगो जो उनके सामर्थ्य से बाहर हो, प्रयास करो कि तुम मासूम और सच्चरित्र होने की दशा में क्रब्रों में प्रवेश करो, खुदा के बताए हुए कर्तव्यों- नमाज़, ज़कात इत्यादि में आलस्य मत करो, अपने पतियों की तन-मन से आज्ञाकारी रहो, उनके सम्मान का अधिकांश भाग तुम्हारे हाथ में है। अतः तुम अपने इस दायित्व को इस खूबी से निभाओ कि खुदा के निकट नेक और चरित्रवानों में गिनी जाओ। फ़ुज़ूलखर्ची न करो, और अपने पतियों के धन को व्यर्थ ही खर्च न करो, किसी की धरोहर में हेरा फेरी न करो, चोरी न करो, शिकवा न करो। एक स्त्री अन्य स्त्री पर या पुरुष पर आरोप न लगाए।

ये समस्त उपदेश जिनका हम उल्लेख कर चुके हैं, इस उद्देश्य से हैं कि हमारी जमाअत खुदा के भय में उन्नति करे और वह इस योग्य हो जाए कि खुदा का आक्रोश जो धरती पर भड़क रहा है वह उन तक न पहुंचे और ताकि इन प्लेग के दिनों में वे विशेष तौर पर सुरक्षित रखे जाएं। सच्चा संयम (आह बहुत ही कम है सच्चा संयम) खुदा को प्रसन्न कर देता है और खुदा साधारण तौर पर बल्कि निशान के तौर पर पूर्ण संयमी को संकट से बचाता है। प्रत्येक धोखेबाज या मूर्ख संयमी होने का दावा करता है परन्तु संयमी वह है जो खुदा के निशान द्वारा संयमी सिद्ध हो। प्रत्येक कह सकता है कि खुदा से प्रेम करता हूं परन्तु खुदा से प्रेम वह करता है जिसका प्रेम आकाशीय साक्ष्य से सिद्ध हो। प्रत्येक कहता है कि मेरा धर्म सच्चा है, परन्तु सच्चा धर्म उस व्यक्ति का है जिस को इसी संसार में प्रकाश प्राप्त होता है। प्रत्येक कहता है कि मुझे मुक्ति प्राप्त होगी, परन्तु इस कथन में सच्चा वह व्यक्ति है जो इसी संसार में मुक्ति के प्रकाश देखता है। अतः तुम प्रयास करो कि खुदा के प्यारे हो जाओ ताकि तुम्हारी प्रत्येक मुसीबत से सुरक्षा की जाए।..... प्रिय जनो! यह धर्म और उसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सेवा का समय है। इस समय को ग़नीमत समझो कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा।तुम अपने वह आदर्श प्रदर्शित करो जो फ़रिश्ते भी आकाश पर तुम्हारी सच्चाई और पवित्रता से हैरान हो जाएं और तुम्हारी सुरक्षा और सलामती के लिए प्रार्थना करें। तुम एक मृत्यु धारण करो ताकि तुम्हें जीवन प्राप्त हो। तुम तामसिक आवेगों से अपने अन्तःकरण को खाली करो ताकि खुदा उसमें प्रवेश करे। एक ओर से पक्के तौर पर परित्याग करो और एक ओर से पूर्ण संबंध स्थापित करो। **खुदा तुम्हारी सहायता करे।**

(किशती नूह, रूहानी खज़ायन, भाग 19, पृष्ठ 82-85)

☆ ☆ ☆

ज़िक्रे इलाही

तकरीर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद खलीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो
जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई (भाग-5)

ज़िक्र करने से संबंधित सावधानियां:

पहली सावधानी यह है कि रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं कि कभी इतना ज़िक्र न करो कि दिल दुखी हो (2) ऐसे समय में ज़िक्र नहीं करना चाहिए जबकि दिल संतुष्ट न हो। जैसे एक आवश्यक काम करना है तब कोई अगर ज़िक्र करने के लिए बैठ जाए तो ध्यान ज़िक्र की ओर न होगा और इस तरह अल्लाह तआला के कलाम का अपमान होगा। और इंसान गुनाहगार ठहरेगा। तो ज़िक्र करने के लिए पहली सावधानी इस तरह करनी चाहिए कि ज़िक्र में इतना लंबा समय न करे कि दिल दुखी हो जाए और दूसरा यह कि ऐसे समय में ज़िक्र के लिए न बैठे जबकि दिल किसी और विचार में लगा हो। और बजाए इनाम पाने के गुनाहगार ठहरे। बल्कि संक्षिप्तता के साथ और ध्यान केन्द्रित होने के समय करे। एक बार रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) घर में आए तो हज़रत आयशा एक महिला से बातें कर रही थी। आपने फ़रमाया क्या कह रही हो। हज़रत आयशा ने कहा यह सुना रही है कि मैं इतनी इबादत करती हूँ और इस तरह करती हूँ आप ने यह सुन कर फरमाया यह कोई खुशी की बात नहीं है कि इतनी अधिक इबादत की जाए। अल्लाह तआला उसी इबादत को पसंद करता है जिस पर निरन्तरता धारण की जा सके। (मिशक्रात किताबुल ईमान) अल्लाह तआला अधिक इबादत से दुखी नहीं होता बल्कि बंदा खुद दुखी हो जाता है और जब दुखी हो जाता है तो फिर इस की इबादत किसी काम की नहीं रहती। अतः अगर कोई अत्यधिक बढ़ता है तो उस पर मुसीबत पड़ जाती है। अब्दुल्लाह पुत्र अमर पुत्र आस के संबंध में आया है कि वह एक शक्तिशाली इंसान थे सारी रात नमाज़ पढ़ते और दिन में रोज़े रखते और सारे कुरआन करीम की तिलावत एक दिन में करते। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया कि यह जायज़ नहीं है। रात का छठा, तीसरा या अधिकतम आधा भाग नमाज़ पढ़नी चाहिए और रोज़ा अधिकतम एक दिन रखना चाहिए और एक दिन इफ्तार करना चाहिए और कुरआन तीन दिन से कम समय में समाप्त नहीं करना चाहिए। (बुखारी किताबुससौम) इसके बारे में अब्दुल्ला बिन अम्र बिन आस ने बहुत कोशिश की कि इससे अधिक के लिए अनुमति मिल जाए लेकिन आप ने अनुमति नहीं दी। वह इसी पर अनुकरण करते रहे। लेकिन जब बूढ़े हो गए। तो बहुत दुख जताते कि मैंने रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से वादा तो कर लिया लेकिन अब नहीं कर सकता। तो अत्यधिक बढ़ना कठिनाइयों में डाल देता है। ज़िक्र भी एक बहुत अच्छी चीज़ है मगर देखो जिस तरह पुलाओ अधिक खा लिया जाए तो वह अपच कर देता है इसी तरह ज़िक्र में अत्यधिक बढ़ना भी नफ़्स पर ऐसा बोझ हो जाता है कि वह ज़िक्र से भागने वाला हो जाता है। अतः धीरे धीरे स्वयं पर बोझ डालना चाहिए और इतना डालना चाहिए जो सहन कर सके।

तीसरी सावधानी यह करनी चाहिए कि शुरुआत में अगर तबीयत ज़िक्र की तरफ आकर्षित न हो। तो भी दिल को मजबूत करके मनुष्य करता रहे और दृढ़ता से इरादा कर ले कि ज़रूर पूरा करूँगा और नीयत कर ले कि शैतान कितना ही ज़ोर लगाए इस बात को हरगिज़-हरगिज़ नहीं मानूँगा। अगर इंसान इस तरह इरादा कर ले तो ज़रूर तबीयत को मनवा लेता है। कहते हैं राय टेकेन एक मशहूर वकील था। उसके मुक़ाबले में एक और वकील आया। उसने यह चालाकी की कि जज से बातें करते करते कह दिया कि राय टेकेन का दावा है कि चाहे कोई जज कितना ही सावधान रहे में उससे मनवा लेता हूँ। यह सुनकर मजिस्ट्रेट ने इरादा किया कि राय टेकेन जो कुछ कहेगा मैं कभी नहीं मानूँगा। अतः जब मुकदमा पेश हुआ तो जो बात राय टेकेन पेश करे। मजिस्ट्रेट उससे इंकार कर दे और आखिरकार दूसरे वकील के पक्ष में ही निर्णय दिया। तो जब व्यक्ति इस बात का इरादा कर लेता है कि मैं अमुक का प्रभाव कभी नहीं स्वीकार करूँगा तो वह उस पर नियंत्रण नहीं पा सकता। अतः प्रारंभिक अवस्था में ज़िक्र करने के समय ऐसी ही स्थिति बनानी चाहिए।

चौथी सावधानी यह है कि ज़िक्र करते समय किसी कष्ट की स्थिति में नहीं होना चाहिए जैसे फर्श पर बैठे हुए कोई चीज़ चुभती हो या और इसी प्रकार की कोई असुविधा हो उसे दूर करके ज़िक्र में मग्न होना चाहिए।

पांचवीं यह कि ऐसी स्थिति बनानी चाहिए कि मझे जो कुछ प्राप्त होगा उसे स्वीकार कर लूँगा। अगर शुरुआत में उदासीन हो। तो भी किसी न किसी समय ज़िक्र

तबीयत में दाखिल हो जाएगा।

छटी यह कि ज़िक्र विनय और विनम्रता से किया जाए। अगर विनय पैदा न हो। तो ऐसी सूत्र बना ले कि जिस से विनय प्रकट होता है। क्योंकि कुछ बातें जो शुरुआत में कृत्रिम रूप से धारण की जाती हैं धीरे धीरे इसी तरह हो जाती हैं। अतः जब कोई विनय धारण करने की कोशिश करता और रोने की शैली बनाता है तो नतीजा यह होता है कि एक समय में विनय पैदा होता है। एक प्रोफेसर से संबंधित लिखा है कि वह बड़ा ही नरम दिल था लेकिन बाद में बड़ा कठोर दिल हो गया। उस का कारण यह हुआ कि एक दिन जो नरमी के कारण उसे कष्ट हुआ तो उसने इरादा किया कि अब सख्त हो जाऊँगा। इसके लिए उसने सख्ती वाली शकल बना ली यद्यपि दिल में वही नरमी थी। लेकिन जाहिरी तौर पर सख्त और कठोर मालूम होता था होते-होते यह हुआ कि दिल भी सख्त हो गया। वह प्रोफेसर यद्यपि अपनी आदत को बुराई की ओर ले गया मगर तुम लोग अगर नेकी की ओर जाने के लिए इस तरह करोगे तो धीरे-धीरे वास्तव में तुम्हारे अंदर विनम्रता उत्पन्न हो जाएगी। और अगर एक दिन एक सेकंड के लिए भी वास्तविक विनम्रता पैदा हो जाएगी तो दूसरे दिन अधिक समय के लिए उत्पन्न हो सकेगी। तो अगर यह कोशिश करोगे तो ज़रूर सफल हो जाओगे।

ज़िक्र करने के समय:

अब जबकि यह सिद्ध हो गया कि ज़िक्र बहुत आवश्यक है जैसा कि मैंने बताया है कि अल्लाह तआला फरमाता है-

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ

(अन्सिः 104) यह पता होना चाहिए कि किस-किस समय ज़िक्र करना चाहिए।

यूँ तो हर समय ही अल्लाह तआला का ज़िक्र करना चाहिए। अतः रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के बारे में आयशा सिद्दीका फरमाती हैं-
كَانَ رَسُولُ اللَّهِ يَذْكُرُ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ أَحْيَانِهِ
(तिर्मिज़ी) रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हर समय ही अल्लाह तआला का ज़िक्र करते थे। लेकिन कुछ समय कुरआन में अल्लाह तआला ने वर्णन फरमाए हैं और वे हैं-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ كُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا
(अल्-अहज़ाब: 42, 43) याद करो अल्लाह को बुक़रह और असील के समय।

यह दोनों समय बहुत उच्च स्तर के हैं। बुक़रह अरबी में पौ फूटने से सूरज निकलने तक को कहते हैं। इस दृष्टि से यह अर्थ हुए कि सुबह की नमाज़ से लेकर सूरज निकलने तक ज़िक्र करो। एक समय यह हुआ और दूसरा समय असील है। शब्द-कोष से मालूम होता है कि असील असर से लेकर सूरज के डूबने तक को कहते हैं। तीसरा चौथा और पांचवा समय जो इस आयत में वर्णन हुआ है -

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ

अर्थात् सब्र कर उन बातों पर जो ये लोग कहते हैं और तस्बीह और तहमीद कर अपने रब की सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले (इन दोनों समयों का ज़िक्र पहले आ चुका है) और रात के समय में और इन की दोनों तरफों में ताकि तेरी इच्छा पूरी हो। इस आयत में अतिरिक्त पहले दो समयों अर्थात् सूरज निकलने के बाद का समय और रात का पहला और पिछला समय ज़िक्र के लिए उपयोगी बताया गया है।

छठा समय प्रत्येक नमाज़ पढ़ने के बाद है। रसूल करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) इस ज़िक्र को हमेशा जारी रखते थे मानो सुन्नत हो गई थी। इब्ने अब्बास कहते हैं कि जब हम दूर होते थे तो **أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** से पता करते थे कि नमाज़ समाप्त हो गई है। अतः नमाज़ के बाद पढ़ने के लिए एक ज़िक्र तो यह है कि-

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ
पढ़ा जाए। दूसरे यह कि **الْحَمْدُ لِلَّهِ** और **سُبْحَانَ اللَّهِ** तैंतीस-तैंतीस बार पढ़ा

ख़ुत्व: जुमअ:

अगर हम ने नमाज़ों में नियमित होना केवल रमज़ान की वजह से किया है और बाद में हम ने फिर सुस्त हो जाना है तो यह तो अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलना नहीं है। अगर हम ने जुम्ओं में नियमित होना केवल रमज़ान के महीने तक ही रखना है तो यह अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार चलना नहीं है। अगर हम ने क़ुरआन की तिलावत को केवल रमज़ान के लिए ही ज़रूरी समझा है और बाद में उसकी ओर ध्यान नहीं देना तो यह अल्लाह तआला की इच्छा पर चलना नहीं है अगर हम ने दरूद और ज़िक्र केवल रमज़ान तक ही सीमित रखना है तो केवल यह बात तो अल्लाह तआला हम से नहीं चाहता।

रमज़ान तो एक प्रशिक्षण शिविर के रूप में आता है। रमज़ान तो अल्लाह तआला ने इसलिए फ़र्ज़ किया है कि जिन नेकियों को तुम कर रहे हो उसमें और अधिक तरक्की करो और हर आने वाला रमज़ान जब समाप्त हो तो हमें इबादत और नेकियों के नए मंजिलों और ऊंचाइयों पर पहुंचाने वाला हो और फिर हम इबादतों और नेकियों के नए और बुलंद मियारों की स्थापना करने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला तो हमसे स्थिरता के साथ उन नेकियों पर चलने की मांग करता है।

पांच फ़र्ज़ नमाज़ों को उन के समय पर संवार कर अदा करने, नमाज़े जुमअ: के महत्त्व को समझते हुए उस को अदा करने में नियमित होने, क़ुरआन करीम की तिलावत को नियमित और समझ कर पढ़ने और इस में वर्णन किए गए आदेशों का अनुकरण करने और अन्य आचरण तथा नेकियों को धारण करने के बारे में क़ुरआन तथा हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाला से महत्त्वपूर्ण उपदेश।

अतः हम में से प्रत्येक को रमज़ान में यह अहद कर के निकलना चाहिए कि जो बातें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहीं और जो बातें हमें खोलकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फरमाईं उन्हें हम हमेशा सामने रखते हुए उनके अनुसार अपना जीवन बिताने की कोशिश करें। अगर हम ये करें तभी हम यह कह सकते हैं कि हम ने अपने आप को रमज़ान में से अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेश के अनुसार गुज़ारने की कोशिश की है। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान करे।

आदरणीया मुश्ताक जुहरा साहिबा पत्नी चौधरी ज़हूर अहमद साहिब बाजवा और आदरणीय चौधरी अबदुहु बकर साहिब आफ मिस्र की वफात, मरहूमों का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा गायब

ख़ुत्व: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अव्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 23 जून 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़तूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ
أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ
مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ -
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - مَلِكِ يَوْمِ
الدِّينِ - إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ. إِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ -

रमज़ान का मुबारक महीना आया और तेज़ी से गुज़र भी गया। बावजूद लंबे दिनों और फिर गर्मी भी अधिक होने के इस बार तो यहां भी रिकॉर्ड गर्मी पड़ी है लेकिन अक्सर या कम से कम जो मुझे लोग मिले वे यही कहते हैं कि इस बार रोज़ा का अधिक एहसास नहीं हुआ या मौसम की तीव्रता के बावजूद अपेक्षाकृत कम अनुभव हुआ लेकिन केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है कि हम कहें कि रोज़े इस बार असामान्य रूप से आसानी से गुज़र गए, आराम से गुज़र गए। अगर गुज़र गए तो यह अल्लाह तआला की कृपा है जो हम पर हुई कि हमें उस ने उन दिनों में आराम से गुज़ार दिया या अगर थोड़ा भूख प्यास का एहसास भी हुआ तो सिर्फ इसलिए कि हम कह दें कि मामूली भूख प्यास का एहसास हुआ और अधिक महसूस नहीं हुआ। यह पर्याप्त नहीं है बल्कि हमें अपनी समीक्षा करनी चाहिए हमें यह देखना चाहिए कि हम ने अल्लाह तआला के इन बरकतों वाले दिनों में क्या प्राप्त किया? चाहे रोज़े आराम से गुज़र गए या थोड़ा सा एहसास हुआ और उस से गुज़र गए तो इससे लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता। लक्ष्य तभी प्राप्त होगा जब हम यह देखें, अपनी समीक्षा करें कि हम ने प्राप्त क्या किया?

अल्लाह तआला जो इन दिनों में रमज़ान के महीने में सातवें आसमान से नीचे के आकाश पर आ जाता है, अल्लाह तआला जो इन दिनों में अपने बन्दों के निकट होकर उनकी दुआ सुनता है। (अल्जामिउल लेशुअबुल ईमान भाग 5 हदीस 3334, 3394 प्रकाशक मक्तब: अरशद नाशिरून बैरूत 2004 ई।) अल्लाह तआला जो इन दिनों में रोज़े वालों का ख़ुद इनाम बन जाता है। (सहीह अल्बुख़ारी किताबुत्तौहीद

हदीस 7492) अल्लाह तआला जो इन दिनों में शैतान को जकड़ देता है। (सहीह मुस्लिम किताबुस्सियाम हदीस 2495) हम ने अल्लाह तआला के इन फज़लों और उसकी दया से फ़ैज़ उठाने के लिए क्या किया या हम ने क्या अहद किए हैं। हम ने अल्लाह तआला की आज्ञाओं को मानने और उसकी शिक्षा के अनुसार जीवन जीने के लिए पिछली कमियों को छोड़ने के लिए क्या अहद किए हैं और किस सीमा तक परिवर्तन अपने अंदर पैदा किए हैं तो यह समीक्षा हमें अल्लाह तआला के स्थायी फज़लों को प्राप्त करने की तरफ ध्यान दिलाने वाली बनाएगी और इसलिए अपनी हालतों में स्थायी बदलाव लाने की कोशिश, अल्लाह तआला के फज़लों को हमेशा हासिल करने वाला बनाएगी।

अगर हम ने नमाज़ों में नियमित होना केवल रमज़ान की वजह से किया है और बाद में हम ने फिर सुस्त हो जाना है तो यह तो अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलना नहीं है। अगर हम ने जुम्ओं में नियमित होना केवल रमज़ान के महीने तक ही रखना है तो यह अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार चलना नहीं है। अगर हम ने क़ुरआन की तिलावत को केवल रमज़ान के लिए ही ज़रूरी समझा है और बाद में उसकी ओर ध्यान नहीं देना तो यह अल्लाह तआला की इच्छा पर चलना नहीं है अगर हम ने दरूद और ज़िक्र केवल रमज़ान तक ही सीमित रखना है तो केवल यह बात तो अल्लाह तआला हम से नहीं चाहता। अगर हमने अपने आचरण और अन्य नेकियों की बातों को केवल रमज़ान तक ही मजबूरी समझ कर करना है तो यह तो ख़ुदा तआला नहीं चाहता। रमज़ान तो एक प्रशिक्षण शिविर के रूप में आता है। रमज़ान तो अल्लाह तआला ने इसलिए फ़र्ज़ किया है कि जिन नेकियों को तुम कर रहे हो उसमें और अधिक तरक्की करो और हर आने वाला रमज़ान जब समाप्त हो तो हमें इबादत और नेकियों के नए मंजिलों और ऊंचाइयों पर पहुंचाने वाला हो और फिर हम इबादतों और नेकियों के नए और बुलंद मियारों की स्थापना करने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला तो हमसे स्थिरता के साथ उन नेकियों पर चलने की मांग करता है। अल्लाह तआला ने तो “अकीमुस्सलात” का आदेश दिया है कि नमाज़ें क़ायम करो। नमाज़ों को समय पर संवार कर अदा करो। अल्लाह तआला ने आदेश दिया है। حَفِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوَسْطَى (अल्बकरह:-239) अर्थात सारी नमाज़ों और विशेष रूप से मध्य नमाज़ का पूरा

ख्याल रखो और हर मुसलमान जानता है कि पाँच नमाज़ों फर्ज़ हैं इसलिए पांचों नमाज़ों की रक्षा का आदेश है और विशेष रूप से मध्य नमाज़ की ओर ध्यान दिलाया है। अल्लाह तआला को मानव स्वभाव का पता है इसलिए विशेष रूप से जोर देकर मध्यम नमाज़ की ओर ध्यान दिलाया है। “सलातुल वुस्ता” का अर्थ है मध्यम या महत्त्वपूर्ण नमाज़। अर्थात् नमाज़ का ऐसा समय जब नमाज़ का महत्त्व बढ़ जाता है। हर नमाज़ ही अल्लाह तआला ने फर्ज़ करार दी है और महत्त्वपूर्ण है फिर “सलातुल वुस्ता” को क्यों महत्त्व दिया है? इसलिए कि किसी नमाज़ के समय मनुष्य व्यक्तिगत या सांसारिक इच्छाओं को प्राथमिकता दे रहा होता है किसी के लिए फजर की नमाज़ पढ़ना मुश्किल है, तब उठकर फजर पढ़ना अल्लाह तआला के करीब करता है वह महत्त्वपूर्ण नमाज़ बन जाती है। किसी को अपने काम और व्यवसाय की वजह से जुहर या अस्त्र की नमाज़ पढ़ना कठिन लगता है उसके लिए उस नमाज़ का महत्त्व बढ़ जाता है। मानो कि जहाँ मुजाहदः करके, कोशिश करके अल्लाह तआला की इबादत की तरफ मनुष्य आए अल्लाह तआला इस प्रयास को भी महत्त्व देते हुए सम्मानित करता है। अल्लाह तआला की नेकियों का इनाम देने की कोई सीमा नहीं है। अतः वह अपनी राह में कोशिश करने वालों को बेहद देता है और जब इंसान दुनिया और व्यक्तिगत इच्छाओं के बुतों को तोड़ कर उसकी तरफ आता है तो उसके फज़लों की भी सीमा नहीं रहती।

अल्लाह तआला ने नमाज़ के बारे में कई जगह विभिन्न संदर्भों से हमें ध्यान दिलाया है। केवल रमज़ान तक ही सीमित नहीं किया बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ों, जुम्ओं और रमज़ान के बारे में एक ऐसा उपदेश फरमाया है जो एक मोमिन और एक ऐसे व्यक्ति को, जो अल्लाह तआला का डर दिल में रखता हो, हर समय सामने रखना चाहिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पाँच नमाज़ों, शुक्रवार अगले शुक्रवार तक और रमज़ान अगले रमज़ान तक उनके बीच होने वाले गुनाहों का प्रायश्चित्त हो जाता है जब तक कि वह बड़े गुनाहों से बचता रहे।

(सहीह मुस्लिम किताबुत्तहारत हदीस 552)

अतः यहाँ खोलकर बयान फरमा दिया कि पाँच नमाज़ों प्रायश्चित्त बनती हैं जब इंसान अपनी पूरी कोशिश कर के पाँच नमाज़ों अपने समय पर अदा करे और हर नमाज़ के बीच का जो अंतराल है इसमें गुनाहों से बचने की कोशिश करता रहे। अगर छोटी मोटी कमजोरियाँ होंगी तो अल्लाह तआला उन्हें माफ कर देगा बशर्ते नमाज़ समय पर उसका हक़ अदा करते हुए अदा की जाए।

फिर इसी तरह हर जुम्अः के महत्त्व को भी स्पष्ट कर दिया कि पांच नमाज़ों का जिस तरह महत्त्व है उन्हें समय पर अदा करने के लिए जिस तरह आदेश और अदा करने की शकल में जिस तरह अल्लाह तआला उनकी कृपा से छोटे गुनाहों को माफ कर देता है बल्कि नमाज़ का हक़ अदा करते हुए अगर नमाज़ें पढ़ी जाएं तो अल्लाह तआला का यह भी वादा है कि दुराचार से भी व्यक्ति को बचाता है बुराइयों से आदमी को बचाता है। तो बहरहाल फरमाया कि जिस तरह पाँच नमाज़ों फर्ज़ हैं उसी तरह जुम्अः भी फर्ज़ है और एक जुम्अः से अन्य जुम्अः तक होने वाली छोटी त्रुटियों और कमजोरियों और छोटे गुनाह भी अल्लाह तआला माफ फरमा देता है। इसका कोई यह मतलब भी न ले कि इस दौरान छोटे गुनाह कर लो। अल्लाह तआला माफ कर देगा। नहीं, बल्कि इसका मतलब है कि मानवीय कमजोरियों की वजह से कोई गलती हो गई है तो अल्लाह तआला नमाज़ों और जुम्ओं में नियमित रहने और गुनाहों की क्षमा की दुआओं और अपने वादों के कारण कि भविष्य में यह गलती नहीं करूंगा, अल्लाह तआला माफ कर देता है।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्ओं में नियमित रहने का महत्त्व बयान फरमाते हुए फरमाया कि जिसने लगातार तीन जुम्ए जानबूझकर छोड़ दिए अल्लाह तआला उसके दिल पर मुहर कर देता है।

(सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 500)

एक रिवायत में यह भी है कि उसका दिल काला हो जाता है।

(अरशैफ़ मुनतदी, 3 दिसम्बर, 2010 अल्मकतबः अल्शामिलः)

अतः जुम्अः के इस महत्त्व को प्रत्येक को समझना चाहिए।

आज रमज़ान का अंतिम जुम्अः है कुछ लोग इस महत्त्व की वजह से आए होंगे कि रमज़ान का अंतिम जुम्अः है इसलिए यहाँ बड़ी मस्जिद में आकर पढ़ लो या कई बार ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं अंतिम जुम्अः जरूर पढ़ना है इसलिए पढ़ लो।

जमाअत में लोगों को जुम्अः के महत्त्व की तरफ बार बार ध्यान दिलाया जाता है और अब शायद थोड़े लोग ही होंगे जो इस बारे में लापरवाही करते हैं लेकिन जो

भी लापरवाही करते हैं उन्हें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद को सुनने के बाद चिंता करनी चाहिए।

अल्लाह तआला ने यह नहीं कहा कि रमज़ान का जुम्अः पढ़ लो या रमज़ान का अंतिम जुम्अः पढ़ लो तो इनाम होगा बल्कि हर जुम्अः का महत्त्व बताया है। इसलिए अल्लाह तआला फरमाता है कि

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۗ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(सूरह अल्जुम्अः 10)

कि हे वे लोगो जो ईमान लाए हो जब जुम्अः के दिन के एक भाग में नमाज़ के लिए बुलाया जाए तो अल्लाह के जिक्र की तरफ जल्दी करते हुए बढ़ा करो और व्यापार छोड़ दिया करो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है अगर तुम ज्ञान रखते हो।

अतः मोमिन को, ईमान का दावा करने वाले को यह आदेश है कि हर जुम्अः की नमाज़ की विशेष व्यवस्था करो और अपने कारोबार, अपने काम, अपने व्यवसाय छोड़ दो। सब काम छोड़ कर, सभी कारोबार छोड़कर, सभी सांसारिक लाभ और फायदा को छोड़कर केवल एक चीज़ की चिंता करो कि तुम ने जुम्अः पढ़ना है। अल्लाह तआला ने फरमाया कि अगर तुम ज्ञान रखते हो तो तुम्हें पता होना चाहिए कि यह तुम्हारे लिए अच्छा है और इसी में बरकत है उसी से तुम्हारे व्यवसायों में बरकत होगी। जैसा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जानबूझ कर जुम्अः छोड़ने वाले के दिल पर मुहर लग जाती है। ऐसे लोगों का ईमान पूर्ण ईमान नहीं रहता। अगर ईमान वास्तविक हो तो कभी व्यक्ति सांसारिक लाभ के लिए अपने जुम्ओं को कुरबान न करे।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर जुम्ओं में समय पर आने और नियमित जुम्अः में शामिल होने वालों के बारे में फरमाया कि जब जुम्अः का दिन होता है मस्जिद के हर दरवाज़े पर फरिश्ते होते हैं वे मस्जिद में पहले आने वाले को पहला लिखते हैं और इस तरह वे आने वालों की सूची तैयार करते रहते हैं यहाँ तक कि जब इमाम ख़ुत्बा के लिए बैठ जाता है तो वे अपने रजिस्टर बंद कर देते हैं और जिक्रे इलाही सुनने में लग जाते हैं।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 3211)

एक रिवायत में यह भी है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लोग क्रयामत के दिन अल्लाह तआला के समक्ष जुम्ओं में आने के हिसाब से बैठे होंगे। (सुनन इब्ने माजा किताब इकामतुस्सलात हदीस-1094) अर्थात् पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा। अतः वे लोग जो बिना मजबूरी के आदत के तौर पर जुम्ओं में देर से आते हैं उन्हें भी इस तरफ ध्यान देना चाहिए। यहाँ भी आज तो रमज़ान के जुम्ओं में आज विशेष रूप से लोग पहले आ बैठे हैं नहीं तो अक्सर मैंने यही देखा है कि जब मैं आता हूँ तो आधी के करीब मस्जिद होती है और फिर धीरे-धीरे ख़ुत्बा के अंत तक या इससे कुछ मिनट पहले तक मस्जिद भरती है। अतः आम दिनों में भी इस ओर ध्यान होना चाहिए। जुम्ओं के हवाले से यह भी बता दूँ कि जुम्अः मर्दों पर फर्ज़ है अगर औरतें आ सकती हैं तो अच्छी बात है अधिक इनाम कमा रही हैं, बेशक आएँ और कई बार माँओं के आने की वजह से बच्चों में भी जुम्अः पढ़ने का ध्यान पैदा होता है लेकिन बहरहाल जुम्अः को मस्जिद में आना तो केवल पुरुषों पर अनिवार्य है। इस बारे में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद बड़ा स्पष्ट है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हर मुसलमान पर सामूहिक जुम्अः पढ़ना ऐसा फर्ज़ है जो वाजिब है अर्थात् फ़र्ज़ है सिवाय चार प्रकार के लोगों के और वे हैं- गुलाम, महिला, बच्चे और मरीज़।

(सुनन अबू दाऊद किताबुस्सलात हदीस-1067)

यह चार लोग हैं जिन पर अनिवार्य नहीं है। गुलाम तो पुराने ज़माने में होते थे अब ऐसे नहीं रहे लेकिन जो नौकरी पेशा हैं उन्हें उन देशों में अपने मालिकों को बता कर कोशिश करनी चाहिए कि जुम्अः के लिए जुम्अः के समय अवकाश लें। कुछ लोगों ने कोशिश की और उन्हें अनुमति मिल भी गई और अगर मजबूरी हो तो जो अहमदी करीब करीब हों उन्हें कोई जगह तलाश करनी चाहिए कि तीन चार इकट्ठे होकर जुम्अः पढ़ लिया करें। महिलाओं पर अनिवार्य नहीं है लेकिन विशेष रूप से बच्चे वाली महिलाओं से मैं कहता हूँ अर्थात् छोटे बच्चे वालियों को, उन्हें ध्यान देना चाहिए कि इतने छोटे बच्चों के साथ मस्जिद न जाएं कि बच्चों के रोने धोने की वजह से दूसरों की नमाज़ खराब हो और ख़ुत्बा सही तरह सुन न सकें। हाँ ईद पर आना प्रत्येक के लिए आवश्यक है हर औरत के लिए, पुरुष के लिए, बच्चे के लिए। इसमें जरूर शामिल होना चाहिए। (सहीह अल्बुख़ारी किताबुल हदीस-971)

और ईद पर अगर छोटे बच्चों वाले भी हैं तो यहाँ जगह बनी हुई है, जहाँ स्थान नहीं होता वहाँ भी अगर नमाज़ न भी पढ़नी हो तो बच्चों के साथ एक तरफ बैठ कर ख़ुल्बा सुन लें। अतः आज बड़ी संख्या में लोग जुम्अः के लिए आए हुए हैं इसलिए इस ओर ध्यान दिला रहा हूँ कि पुरुष अपने जुम्ओं की विशेष रूप से रक्षा करें।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान के बीच होने वाले गुनाहों की माफी के बारे में फरमाया कि अल्लाह तआला एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक होने वाले छोटे गुनाहों को भी माफ कर देता है लेकिन यह स्पष्ट होना चाहिए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गुनाहों के क्षमा के जो माध्यम बताए हैं वे आप एक क्रम से उल्लेख फरमा रहे हैं। पहले नमाज़ फिर जुम्अः फिर रमज़ान। अतः इस क्रम से यह ग़लतफहमी दूर हो जानी चाहिए कि केवल साल के बाद रमज़ान की इबादतें ही गुनाहों से क्षमा का माध्यम हैं बल्कि यह क्रम इस ओर ध्यान दिला रहा है कि नमाज़ों की पांच बार रोज़ाना अदायगी अपनी सुरक्षा में लिए हुए सातवें दिन जुम्अः में प्रवेश करके जुम्अः की बरकतों से हिस्सा दिलाएगी और साल भर के जुम्अः रमज़ान में प्रवेश करते हुए रमज़ान के फ़ैज़ से लाभान्वित करेंगे। दैनिक पाँचों नमाज़ों अल्लाह तआला के समक्ष कहेंगी कि यह तेरा बन्दा तेरे भय और तेरी मुहब्बत के कारण बड़े गुनाहों से बचते हुए पांच बार तेरे सम्मुख होता रहा। हर जुम्अः निवेदन करेगा कि तेरा यह बन्दा सात दिन अपने आप को बड़े गुनाहों से बचाते हुए जुम्अः के दिन जिस में तेरे प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह भी इरशाद है कि इसमें एक दुआ की स्वीकृति का क्षण भी आता है। (सहीह बुखारी हदीस-6400) अपनी दुआओं की स्वीकृति की इच्छा लेकर तेरे सम्मुख आता रहा। रमज़ान कहेगा कि हे ख़ुदा! इस बन्दे ने रमज़ान का हक़ अदा करने के बाद गुनाहों से बचते हुए और नेकियाँ अदा करते हुए इस रमज़ान में इस उम्मीद से प्रवेश किया कि तू इसे भी अपनी रहमत, क्षमा और आग से बचाने के अशरों (दस दिन) से लाभान्वित करेगा।

तो अल्लाह तआला जो बड़ा रहीम व करीम है उनसे लाभान्वित करते हुए व्यक्ति को अपनी रहमत की चादर में ढक लेता है और शैतान के हमलों से उसे बचाता है। अतः भाग्यशाली हैं हम में से जो इस सोच के साथ अपनी नमाज़ों, जुम्ओं और अपने रोज़ों के हक़ अदा करते हुए अल्लाह तआला की पनाह में आने वाले हैं और रमज़ान के इस माहौल से हर लिहाज़ से पवित्र होकर निकलने वाले हैं। ऐसी पवित्रता जो हमेशा के लिए अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने वाला बनाने वाली है।

फिर रमज़ान में विशेष रूप से क़ुरआन पढ़ने, सुनने की ओर ध्यान पैदा होता है। कई लोग कोशिश करते हैं कि कम से कम क़ुरआन का एक दौर पूरा कर लें क्योंकि यह सुन्नत भी है लेकिन साथ ही इस महीने में क़ुरआन की तिलावत की ओर तवज्जो और व्यवस्था इस ओर भी ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए कि अब हमें प्रतिदिन नियमित क़ुरआन के कुछ भाग की तिलावत करनी है।

अल्लाह तआला ने जहाँ नमाज़ों के विभिन्न समयों की ओर ध्यान दिलाया है और इसका महत्त्व वर्णन फरमाया है वहाँ यह भी कहा है कि-

وَقُرْآنَ الْفَجْرِ - إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا (बनी इस्राईल-79)
अर्थात् फजर की तिलावत को भी महत्त्व दो बेशक फज़्र को क़ुरआन पढ़ना ऐसा है कि उसकी गवाही दी जाती है। अतः क़ुरआन पढ़ना केवल विशेष दिनों तक ही विशेष नहीं किया गया बल्कि नमाज़ के साथ उसे वर्णन करके उसका महत्त्व समझाया गया है।

फिर तिलावत के साथ इसे समझने की ज़रूरत है उसका अनुवाद पढ़ने की ज़रूरत है, ताकि अल्लाह तआला के आदेश का भी हमें पता चले और इस ज़माने में तो विशेष रूप से इसे नियमित पढ़ने की ज़रूरत है जब मुसलमान कहलाने वाले भी उसकी शिक्षा भुला बैठे हैं। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी ध्यान दिलाते हुए फरमाया कि जो लोग क़ुरआन को सम्मान देंगे वे आसमान पर सम्मान पाएँगे। (किशती नूह, रूहानी खज़ायन, भाग 19, पृष्ठ 13) कौन है जो आसमान में सम्मान पाना न चाहता हो। अतः इसकी तिलावत में नियमितता और आदेशों को तलाश करके उनका पालन इससे लाभान्वित करेगा।

इसी तरह अल्लाह तआला ने फरमाया है कि अगर तुम समृद्धि और सफलता चाहते हो तो मेरे ज़िक्र में अपनी ज़बानों को डुबोए रखो। जुम्अः की नमाज़ के बाद जब फारिग हो जाओ फिर अपने अल्लाह तआला का ज़िक्र करो उसे याद रखो इससे तुम्हें सफलता मिलेगी। अतः क़ुरआन करीम की तिलावत के इस महत्त्व को हमेशा मद्देनज़र रखते हुए अब क़ुरआन की तिलावत में कभी सुस्ती नहीं होनी

चाहिए इसी तरह ज़िक्र इलाही में भी हमारा जो ध्यान पैदा हुआ है उसका लाभ तभी है जब हम रमज़ान के बाद भी इसे जारी रखें। इसी तरह दूसरी नेकियाँ और आचरण हैं। हम अहमदी भाग्यशाली हैं कि हमें अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने की तौफ़ीक़ अता फरमाई और आप अलैहिस्सलाम ने हर अवसर पर और हर तरह से हमारा सुधार किया और हमें सीधे रास्ते पर चलाने और हमारा रुख हमेशा अल्लाह तआला की ओर रखने और अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करने की तरफ मार्गदर्शन किया है। आप हमसे क्या चाहते हैं आप ने बार बार हमें फरमाया कि तुम जो मेरी बैअत में आए हो हमेशा इबादतों के द्वारा भी और उच्च नैतिकता के द्वारा भी अपने अंदर शुद्ध परिवर्तन पैदा करते चले जाओ।

आपने एक जगह फरमाया कि- “जब तक मनुष्य शुद्ध हृदय और ईमानदारी और श्रद्धा से सभी अवैध मार्गों और उम्मीदों के द्वारों को अपने ऊपर बंद करके ख़ुदा तआला ही के आगे हाथ नहीं फैलाता तब तक वह इस योग्य नहीं होता कि अल्लाह तआला की सहायता और समर्थन उसे मिले लेकिन जब वह अल्लाह तआला ही के दरवाज़े पर गिरता और उससे दुआ करता है तो उसकी यह हालत सहायता और दया को खींचने वाली होती है।” (अल्लाह तआला की सहायता और दया को खींचता है।) फ़रमाया “ख़ुदा तआला आसमान से मनुष्य के दिल के कोनों में झाँकता है और अगर किसी कोने में भी किसी प्रकार का अन्धेरा या शिर्क और बिदअत का कोई हिस्सा होता है तो उसकी दुआओं और इबादतों को उसके मुंह पर उल्टा मारता है और अगर देखता है कि उसका दिल हर प्रकार के स्वाभाविक स्वार्थों और अत्याचार से मुक्त और साफ है तो उसके लिये दया के दरवाज़े खोलता है और उसे अपने छाया में लेकर उसकी परवरिश की ख़ुद ज़िम्मेदारी लेता है।”

(मल्फूज़ात जिल्द 5, पृष्ठ 396-397 एडिशन 1985 ई।)

अतः यह है वह मियार जो हमें हमेशा प्राप्त करते चले जाने की कोशिश करनी चाहिए हमारी इबादतें हमेशा अल्लाह तआला के लिए शुद्ध हों। रमज़ान के बाद भी हम अपनी इबादतों की मियार कायम रखने वाले हों कि हर पल अल्लाह तआला की छाया में रहते हुए उसकी परवरिश के फ़ैज़ से फ़ैज़ पाते रहें।

फिर इस बात को बयान फरमाते हुए कि आप की बैअत में आने के बाद हमारे मियारों के बारे में आप क्या चाहते हैं आप फरमाते हैं- “वह जो इस सिलसिले में दाखिल होकर मेरे साथ इरादत और मुरीदी का संबंध रखते हैं इससे उद्देश्य यह है कि वह नेक आदत और नेकी और तक्वा के उच्च स्तर तक पहुँच जाएँ और कोई दंगा और दुष्टता और लुचपन उनके पास न आ सके। वह पाँचों समय जमाअत के साथ नमाज़ के पाबन्द हों, वह झूठ न बोलें, वह किसी को ज़बान से कष्ट न दें वह किसी प्रकार की बुराई के करने वाले न हों और किसी शरारत और अत्याचार और बुराईयों और दंगा तथा प्रलोभन का विचार भी मन में न लाएं। ।।।।। सभी स्वाभाविक भावनाओं और व्यर्थ हरकतों से बचते रहें और ख़ुदा तआला के साफ दिल और बुराई से बचने वाले और ग़रीब स्वभाव के बन्दे हो जाएँ।” (मज्मूआ इश्तिहारात भाग-3, पृष्ठ 46-47)

फिर आप फरमाते हैं “प्रत्येक बुराई मुकाबला के योग्य नहीं इसलिए आवश्यक है कि प्रायः अफ़ू और क्षमा की आदत डालो।” (ज़रूरी नहीं है कि हर बात का उत्तर लड़ाई से दिया जाए) और फरमाया “और धैर्य और विनम्रता से काम लो” (मज्मूआ इश्तिहारात भाग-3, पृष्ठ 48) तो यह आचरण और आदतें स्थायी अपनाने का आदेश दिया है। झगड़ों से बचने के लिए केवल रमज़ान में ही नहीं कहना कि इन्नी साईमुन मैं रोज़ेदार हूँ इसलिए मैंने नहीं लड़ना बल्कि रमज़ान के प्रशिक्षण से लाभ उठाते हुए अपने जीवन को स्थायी उच्च नैतिकता के अनुसार हमें ढालना चाहिए।

आप ने इसे अधिक खोलकर एक जगह उल्लेख किया कि “चाहिए कि तुम्हारे मन धोखा से मुक्त और तुम्हारे हाथ अत्याचार से पवित्र और तुम्हारी आँखें अशुद्धता से बची हों और तुम्हारे अंदर सिवाय धर्म और मानव की सहानुभूति के और कुछ न हो। (मज्मूआ इश्तिहारात भाग-3, पृष्ठ 48) (यह होना चाहिए कि सही रास्ते पर चलने वाले, प्राणी से सहानुभूति करने वाले, आंखें हर गंदी चीज़ से बचने वाली हों)। आपने फरमाया अगर तुम अपनी हालत ऐसी कर लो जो मैं बता रहा हूँ और ख़ुदा तुम से चाहता है तो निश्चय समझो कि ख़ुदा तुम्हारा ही है। तुम सोए हुए होगे और ख़ुदा तुम्हारे लिए जागेगा, तुम दुश्मन से असावधान होगे और ख़ुदा उसे देखेगा और योजना को तोड़ेगा। (किशती नूह रूहानी खज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 22)

अतः ये बातें हर समय सामने रखने की ज़रूरत है। यह बात आप ने बार बार वर्णन फरमाई कि अगर तुम इन बातों का ध्यान नहीं करते तो केवल बैअत तुम्हारे

लिए पर्याप्त नहीं है। आपने जिस चिंता के साथ अपने मानने वालों के सामने लाहे अमल रखा है वह भी इसमें से कुछ हिस्से में प्रस्तुत करता हूँ। प्रत्येक खुद ही समीक्षा कर सकता है किस हद तक हम ने इस पर अमल किया है या अमल करते हैं।

आप फरमाते हैं तुम उसकी सेवा में स्वीकार नहीं हो सकते जब तक जाहिर व बातिन में एक न हो बड़े होकर छोटों पर दया करो न उनका अपमान और विद्वान होकर नादानों को नसीहत करो न कि अहंकारवश उनकी निंदा” (अगर ज्ञान है तो तो विनम्रता से नसीहत करो। यह नहीं कि अपनी बड़ाई प्रकट करनी है, अपने ज्ञान का प्रकटन करना है और फिर उन्हें अपमानित करना है।) फरमाया कि “अमीर होकर गरीबों की सेवा करो न खुदपसंदी से उन पर अहंकार।” (अल्लाह तआला ने फजल फरमाया तुम्हें धन संपत्ति दी है, हुकूमत दी है, दूसरों से बेहतर किया है तो उनकी सेवा करो न कि उन पर अहंकार करो।) फरमाया “तबाही के रास्तों से डरो खुदा से डरते रहो और संयम से काम लो, प्राणियों की पूजा न करो और अपने अल्लाह के हो जाओ और दुनिया से आहत रहो और उसी के हो जाओ और उसी के लिए जीवन व्यतीत करो और उसके लिए प्रत्येक नापाकी और गुनाह से घृणा करो क्योंकि वह पवित्र है।” (अल्लाह तआला अगर संबंध जोड़ना है तो अल्लाह तआला पाक है इसलिए प्रत्येक नापाकी और गुनाह से घृणा उत्पन्न करने की जरूरत है। फरमाते हैं चाहिए कि हर सुबह तुम्हारे लिए गवाही दे कि तुमने संयम से रात बिताई और प्रत्येक शाम तुम्हारे लिए गवाही दे कि तुमने डरते-डरते दिन व्यतीत किया। कहते हैं कि दुनिया की लानतों से मत डरो कि वे धुएं की तरह देखते देखते गायब हो जाती हैं और वह दिन को रात नहीं कर सकती बल्कि तुम खुदा की लानत से डरो जो आकाश से उतरती है और जिस पर पड़ती है उसकी दोनों जहान में जड़ काट दी जाती है। आप फरमाते हैं कि तुम दिखावे के साथ स्वयं को बचा नहीं सकते। यह नहीं है कि दिखावे के रूप में कुछ कर दो तो अपने आपको बचा लोगे क्योंकि वह खुदा जो तुम्हारा खुदा है उसकी मनुष्य के पाताल तक नजर है, अंदर दिल की गहराई तक जानता है। क्या तुम उसे धोखा दे सकते हो, नहीं यह कभी नहीं हो सकता है। अतः तुम सीधे हो जाओ और साफ हो जाओ और पाक हो जाओ और खरे हो जाओ और अगर एक कण तीरगी तुम में बाकी है तो वह तुम्हारी सारी रोशनी को दूर कर देगी। अगर थोड़ा सा भी अंधेरा दिल में है तो जो भी प्रकाश है उसे अंधेरा दूर कर देता है। कहते हैं अगर तुम्हारे किसी पहलू में अहंकार है या दिखावा है या खुद पसंदी है या सुस्ती है तो तुम ऐसी चीज नहीं हो कि जो स्वीकार योग्य हो, ऐसा न हो कि आप केवल कुछ बातों को लेकर अपने प्रति धोखा दो कि जो कुछ हम ने करना था कर लिया क्योंकि खुदा चाहता है कि तुम्हारी हस्ती पर पूरी-पूरी क्रांति आवे। हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है वास्तविक मोमिन बनना है तो अपनी हस्ती पर एक क्रांति लानी चाहिए और वह तुम से एक मौत मांगता है जिसके बाद वह तुमको जीवित करेगा। फरमाते हैं तुम आपस में जल्द सुलह करो और अपने भाइयों के गुनाह बखशो क्योंकि दुष्ट है वह मनुष्य कि जो अपने भाई के साथ सुलह पर राजी नहीं, वह काटा जाएगा क्योंकि वह फूट डालता है। तुम अपनी नफसानियत हर पहलू से छोड़ दो और आपसी नाराजगी जाने दो। निजी अहंकार और नफसानियत को छोड़ो और आपस में इसलिए नाराजगियाँ न पैदा करो और सच्चे होकर झूठे की तरह विनम्रता धारण करो ताकि तुम बख्शे जाओ। फरमाते हैं कि नफसानियत की स्थूलता छोड़ दो कि जिस दरवाजे के लिए तुम बुलाए गए हो उससे एक स्थूल व्यक्ति (मोटा व्यक्ति) प्रवेश नहीं कर सकता। क्या ही दुर्भाग्यपूर्ण वह व्यक्ति है जो इन बातों को नहीं मानता जो खुदा के मुख से निकलीं और मैंने बयान कीं। फरमाते हैं जो इन बातों को नहीं मानता जो खुदा के मुख से निकलीं और मैंने बयान कीं। तुम अगर चाहते हो कि आसमान पर तुमसे खुदा प्रसन्न हो तो तुम परस्पर ऐसे एक हो जाओ जैसे एक पेट में से दो भाई। तुम में से अधिक बुजुर्ग वही है जो अधिक अपने

भाई के गुनाह माफ़ करता है और बदबख्त है वह जो जिद करता है और माफ़ नहीं करता सो उसका मुझ में हिस्सा नहीं। आप कहते हैं- दुष्ट खुदा का सानिध्य (कुर्ब) प्राप्त नहीं कर सकता, अहंकारी उसका सानिध्य प्राप्त नहीं कर सकता, अत्याचारी उसका सानिध्य प्राप्त नहीं कर सकता। बेईमान उसका सानिध्य प्राप्त नहीं कर सकता और प्रत्येक जो उसके नाम के लिए स्वाभिमानी नहीं उसका सानिध्य प्राप्त नहीं कर सकता। आप फरमाते हैं प्रत्येक नापाक आंख उससे दूर है प्रत्येक नापाक दिल उससे बेखबर है वह जो उसके लिए आग में है वह आग से बचाया जाएगा। वह जो उसके लिए रोता है वह हंसेगा, वह जो उसके लिए दुनिया से तोड़ता है वह उसे मिलेगा। तुम सच्चे दिल से और पूरी सच्चाई से और उत्साह के कदम से खुदा के दोस्त बनो ताकि वह भी तुम्हारा दोस्त बन जाए। तुम अधीनस्थों पर और अपनी पत्नियों पर और अपने गरीब भाइयों पर दया करो ताकि आसमान पर भी दया हो। तुम सचमुच उसके हो जाओ ताकि वह भी तुम्हारा हो जावे। फरमाया कोई आपदा पृथ्वी पर पैदा नहीं होती जब तक आसमान से आदेश न हो और कोई आपदा दूर नहीं होती जब तक आसमान से दया नाजिल न हो। सो तुम्हारी समझदारी इसी में है कि तुम जड़ को पकड़ो न शाखा को। फरमाया तुम्हारे लिए एक आवश्यक शिक्षा यह है कि कुरआन शरीफ को महजूर (त्यागी हुई चीज) की तरह न छोड़ दो कि तुम्हारी इसी में जिन्दगी है। (कुरआन शरीफ की शिक्षा को हमेशा पकड़ कर रखो।) फरमाते हैं- जो लोग कुरआन को सम्मान देंगे वह आसमान पर सम्मान पाएँगे। जो लोग प्रत्येक हदीस और प्रत्येक कथन पर कुरआन को प्राथमिकता देंगे उन्हें आसमान पर प्राथमिकता दी जाएगी। मानवजाति के लिए धरती पर अब कोई किताब नहीं सिवाए कुरआन के। और समस्त आदमजादों के लिए अब कोई अवतार और शफीअ नहीं लेकिन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। अतः तुम कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत इस प्रतापी नबी के साथ रखो और गैर को इस पर किसी प्रकार की बड़ाई मत दो ताकि आसमान पर तुम मोक्ष प्राप्त लिखे जाओ और याद रखो कि मोक्ष वह चीज नहीं जो मरने के बाद प्रकट होगी बल्कि वास्तविक मोक्ष वह है कि इसी दुनिया में अपना प्रकाश दिखलाता है। फरमाया- मोक्ष प्राप्त कौन है? वह जो विश्वास रखता है जो खुदा सच है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसमें और सभी प्राणियों के मध्य शफीअ हैं। (आपकी सिफारिश और आप अर्थात आँ हजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही अल्लाह तआला और सृष्टि के बीच वास्ता हैं।) फरमाया- और आकाश के नीचे न उसके समकक्ष कोई रसूल है और न कुरआन के समकक्ष कोई और किताब है। और किसी के लिए खुदा ने न चाहा कि वह हमेशा जीवित रहे मगर ये बुजुर्ग नबी हमेशा के लिए जीवित है।

(किशती नूह, रूहानी खजायन, भाग 19, पृष्ठ 12-14)

इन बातों के बाद फिर आपने पुनः ताकीद फरमाई कि इन सब बातों के बाद फिर मैं कहता हूँ कि यह मत विचार करो कि हम ने जाहिरी तौर पर बैअत कर ली है। जाहिर कुछ चीज नहीं है खुदा तुम्हारे दिलों को देखता है।

(किशती नूह, रूहानी खजायन, भाग 19, पृष्ठ 18)

अतः हम में से प्रत्येक को रमजान में यह अहद कर के निकलना चाहिए कि जो बातें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहीं और जो बातें हमें खोलकर हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फरमाई उन्हें हम हमेशा सामने रखते हुए उनके अनुसार अपना जीवन बिताने की कोशिश करें। अगर हम ये करें तभी हम यह कह सकते हैं कि हम ने अपने आप को रमजान में अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेश के अनुसार गुजारने की कोशिश की है। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

नमाज के बाद दो जनाजा गायब भी पढ़ाऊंगा। एक जनाजा है मुकर्रमा आदरणीया मुशताक जुहरा साहिबा का जो स्वर्गीय चौधरी जहूर अहमद साहिब बाजवा की पत्नी थीं। 12 जून रात 8 बजकर 45 मिनट पर रब्बा में 91 साल की उम्र में मृत्यु हुई।

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का
अभिलाषी

जी.एम. मुहम्मद

शरीफ़

जमाअत अहमदिया
मरकरा (कर्नाटक)

JUST GLOW
LIGHTING PALACE

9448156610
08272 - 220456

Email:
justglowlight@yahoo.com

Mohammed Shareef

Akanksha Complex,
Race Course Road, Madikeri

इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके पिता चौधरी इनायतुल्लाह साहिब थे जिन्होंने चौदह साल की उम्र में हज़रत खलीफतुल मसीह सानी के हाथ पर बैअत की थी। आदरणीया का निकाह 1944 ई में चौधरी ज़हूर अहमद बाजवा साहिब वाक्फे जिन्दगी के साथ हज़रत मौलाना गुलाम रसूल साहिब राजेकी ने पढ़ाया था और इसमें एक लंबा ख़ुत्बा दिया था जिस में कुछ अल्लाह तआला के विशेष फज़लों का उल्लेख किया था। बहरहाल यह तो एक लंबा ख़ुत्बा है और इस निकाह की वजह से ही फिर इनके खानदान में और अधिक अहमदियत भी फैली। अल्लाह तआला ने स्वर्गीया को तीन बेटे और दो बेटियाँ प्रदान कीं। एक वाकिफे जिन्दगी बेटे ज़हीर बाजवा साहिब अमेरिका में हैं।

चौधरी ज़हूर अहमद बाजवा साहिब इंग्लैंड में मुबल्लिग़ भी रहे हैं। 1955 ई में रब्बा वापस गए और फिर नायब नाज़िर इस्लाहो इरशाद नियुक्त हुए। नाज़िर कृषि विभाग रहे, नाज़िर उमूरे आमा रहे। लंबा समय हज़रत खलीफतुल मसीह सालिस^र के निजी सचिव भी रहे। नाज़िर तालीमुल कुरआन भी रहे और अंत में वफ़ात के समय सदर, सदर अंजुमन अहमदिया भी थे। आदरणीया मुश्ताक जुहरा जी ने अपने वाक्फे जिन्दगी पति के साथ बड़े अच्छे तरीके से समय बिताया और कभी कोई ऐसी इच्छा नहीं की जिससे एक वाक्फे जिन्दगी को कोई कठिनाई आए। 1944 ई में उनकी शादी हुई अगले साल 1945 में उनके यहाँ पुत्र पैदा हुआ और बेटा एक महीने का था तो उस समय चौधरी ज़हूर बाजवा साहिब को मुबल्लिग़ के रूप में लंदन भेज दिया गया और भारत पाकिस्तान का विभाजन जब हुआ है तो बाजवा साहिब यहाँ लंदन में थे और उस समय भी उनकी पत्नी को कुछ परेशानियों से गुज़रना पड़ा। फिर 1951 से 1955 ई तक आदरणीय बाजवा साहिब की पत्नी भी ज़हूर बाजवा साहिब के साथ यहां इंगलिस्तान में रहीं और उस समय यहाँ मुबल्लिग़ों के हालात बहुत आसान न थे जमाअत की वित्तीय स्थिति भी कमज़ोर थी, बड़े कठिन परिस्थितियों में गुज़ारा होता था लेकिन उन्होंने कभी शिकवा नहीं किया और बड़े आराम से वह समय बिताया। फिर रब्बा में पहले क्वार्टरों में रहते थे फिर अपना घर दारुससदर उत्तरी में बना लिया तो वहाँ अपने घर में रहीं और क्योंकि ज़मींदार परिवार था इसलिए हर समय उनके गांव के या अजीजों के कुछ छात्र जो रब्बा में पढ़ने के लिए आते थे वे और दुसरे लोग भी उनके घर में रहते थे। घर भी इतना बड़ा नहीं था लेकिन हर समय पंद्रह बीस आदमी उनके घर में रहते थे और उनकी मेहमान नवाज़ी यह बड़े शौक से किया करती थीं। उनके बेटे ने लिखा है कि रोज़ाना तहज़ुद के साथ आप के दिन का आरम्भ होता था फिर नमाज़े फ़ज़्र अदा करने के बाद जोर से कुरआन की तिलावत करना आप की दिनचर्या थी, इस के बाद कुछ भैंसों आदि रखी हुई थीं, जानवर रखे हुए थे दूध बिलोती थीं और फिर जो मोहल्ले के गरीब लोग थे वह लस्सी लेने वाले आ जाते उनकी एक लम्बी लाइन होती थी उनको लस्सी देती थीं और इसके बावजूद घर सभालना और ये सारे काम करने के बाद बाकी सामाजिक संबंध भी बड़े अच्छे थे। लिखते हैं कि कुरआन के साथ आप को बहुत प्यार था और हज़रत सय्यदा मर्यम सिद्दीका साहिबा छोटी आपा पत्नी हज़रत खलीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो से आपने कुरआन शरीफ भी पढ़ा। और फिर अनुवाद भी विशेष रूप से पढ़ा। हमेशा प्रत्येक से नैतिकता से पेश आती थीं। मेहमान नवाज़ी का पहले उल्लेख कर चुका हूँ। यहां भी जब थीं तो मेहमान नवाज़ी के लिए इतने फण्ड नहीं होते थे और कोई मेहमान नवाज़ी का प्रबंध नहीं था तो फिर भी उन्होंने यहां बैकिंग सीखी और हर आने वाले को खुद ही बैकिंग करके मेहमान नवाज़ी करती थीं और चीज़ें उपलब्ध कराती थीं।

हनीफ महमूद साहिब नायब नाज़िर इस्लाहो इरशाद लिखते हैं कि यह चौधरी ज़हूर अहमद बाजवा साहिब की जीवनी लिख रहे थे तो इस संबंध में उनके साथ संपर्क होता रहा और यह लिखते हैं कि बावजूद इसके कि आदरणीया काफी ज़मींदार परिवार की थीं लेकिन जब एक वाक्फे जिन्दगी से ब्याह कर उसके घर में आई हैं तो बड़ी मामूली जीवन बिताया। वहाँ अपने घर में तो नौकर पर्याप्त थे और नौकरों से काम होते थे लेकिन यहाँ आकर स्वयं अपने हाथ से सारे काम किए, कहते हैं कि लंदन में रहने के दौरान का वृत्तांत सुनाते हुए बयान करती थीं कि बड़ी तंगी से गुज़र बसर होती थी। कड़ाके की ठंड के मौसम में न गीज़र की सुविधा थी न कमरे गर्म करने के लिए हीटर होते थे न कोयले उपलब्ध थे और बजट के भीतर रहते हुए जो भी काम करना होता था, करना होता था। बड़ी मुश्किलों से गुज़ारा होता था। ठण्ड-ठण्ड में गुज़ारा करते थे। थोड़ी देर के लिए हीटिंग करते थे। चौधरी साहिब भी बड़े सिद्धांतों के पाबन्द रहे हैं यहाँ बड़ी सादगी से उन्होंने गुज़ारा किया। फिर यह लिखते हैं कि 1955 में जब चौधरी ज़हूर बाजवा साहिब को लंदन से वापस मर्कज़ आने का आदेश हुआ तो स्वर्गीया उन दिनों बीमार थीं और डॉक्टरों ने पूरी तरह बेड रेस्ट के लिए कहा हुआ था लेकिन जब वापसी का आदेश आया तो चौधरी साहिब ने तैयारी शुरू कर दी। लोगों ने कहा कि आपकी पत्नी बीमार हैं तो कुछ समय के लिए हज़रत खलीफतुल मसीह सानी से कुछ

समय के लिए अनुमति ले लें। उन्होंने कहा नहीं, आदेश आया है इसलिए वापस जाना है और न ही स्वर्गीया ने भी उस पर कोई बहस की। उस समय यात्रा भी आसान नहीं थी और तुरंत पति के साथ बावजूद अपनी बीमारी के वापसी के लिए तैयार हो गईं। अल्लाह तआला स्वर्गीया से माफी का व्यवहार करे और दर्जे बुलंद करे और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियाँ जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा है आदरणीय अब्दुहू बकर साहिब का है जो मिस्र के थे 12 जून को दिल के हमले के परिणामस्वरूप 41 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। डॉक्टर हातिम हलमी शाफई साहिब सदर जमाअत मिस्र लिखते हैं कि मरहूम ने 2011 ई में बैअत की थी अरबी और दीनयात के उस्ताद थे लेकिन काम छोड़कर खुद को जमाअत की सेवा के लिए वाक्फ कर दिया। आप दक्षिण मिस्र के एक बहुत अज्ञानी और द्रेषपूर्ण समाज में पैदा हुए थे लेकिन इसके बावजूद बहुत सुलह पसंद और कठोरता से बहुत दूर रहने वाले थे। बैअत से पहले उलेमा की पुस्तकों में वर्णित मिथकों ने उन्हें इस कदर हैरान किया हुआ था कि उन्हें डर था कि शायद हमारा धर्म अर्थात इस्लाम ही कुछ ग़लत बातें सिखाता हो। नऊज़ोबिल्लाह। मौलवियों की बातें सुनकर उन्हें यह विचार पैदा हुआ। विशेष रूप से मसीह के जीवन, क्रूस से मुक्ति और आकाश पर उठाए जाने आदि मामलों के बारे में बड़ा हैरान थे यहाँ तक कि उन्हें एक ईसाई ने कुछ ईसाई चैनलों के नंबर दिए कि वहां पर कार्यक्रम देखो ताकि आप को यकीन आए कि हज़रत मसीह में कई ऐसी विशेषताएं थीं जो अन्य मनुष्यों में नहीं थीं। इसी खोज में उन्हें एम टी ए भी मिल गया अल्लाह तआला ने उन्हें हिदायत देनी थी। मरहूम अपनी बैअत का ज़िक्र करते हुए इस वृत्तांत को बताते हुए कहते हैं कि मैंने एक कार्यक्रम में मुस्तफा साबिर साहिब मरहूम को देखा जो कह रहे थे कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम क्रूस पर मरे नहीं बल्कि बेहोश हुए थे और फिर आप ने पूर्व की ओर हिज़रत (प्रवास) की और सामान्य रूप से मृत्यु पाई। जब मैं टीवी देख रहा था तो मैं टेक लगाए बैठा था यह बात सुनकर मैं सीधा होकर बैठ गया और पूरे ध्यान से बात सुनने लगा। यह अल-हवारुल मुबाशिर कार्यक्रम था जब वास्तविकता मुझ पर स्पष्ट हुई तो पूरे जोर से चीखा कि अल्लाहु अकबर सच प्रकट हो गया। कहते हैं खुशी से उछलने लगा इसी दौरान कार्यक्रम में अंतराल हुआ और शरीफ उदा साहिब ने घोषणा की कि अब हम हज़रत इमाम महदी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क़सीदा सुनेंगे और क़सीदा का आरम्भ था कि-

“इन्नी मिनल्लाहिल अज़ीज़िल अकबर” अर्थात निस्संदेह मैं अल्लाह तआला की तरफ से हूँ जो ग़ालिब (शक्तिशाली) और सबसे बड़ा है। साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर भी दिखाई गई जिस पर मैंने कार्यक्रम को pause किया और तस्वीर को ध्यानपूर्वक देखने लगा तो कहते हैं कि जब देख रहा था तो मैं कहता हूँ यह तो वही चेहरा है जिसे मैंने कुछ समय पहले स्वप्न में चंद्रमा में देखा था। कहते हैं ये क्षण बहुत सुंदर थे और मेरी खुशी बयान से बाहर थी। मैंने उसके बाद और भी कार्यक्रम देखे और तीन दिन के बाद अल्लाह तआला ने वफात मसीह नासरी अलैहिस्सलाम और सलीब से मुक्ति और हिज़रत का रहस्य मेरे लिए हल कर दिया। स्वर्गीय की बैअत के बाद काम वालों ने भी निकाल दिया ग्रामीणों और सगे संबंधियों और जान-पहचान रखने वालों सब ने अत्यंत तंगी उन पर की लेकिन यह सच से नहीं हटे बल्कि प्रतिदिन ईमान में बढ़ते चले गए और दृढ़ता उन्हें प्रदान होती गई। चार साल पहले उन्होंने जो स्कूल में पढ़ाते थे उसका काम छोड़ कर जमाअत की सेवा के लिए जीवन समर्पित किया। बहुत विनम्र, सभ्य, अत्यंत चरित्रवान, श्रद्धालु और असामान्य रूप से आज्ञापालन करने वाले थे। आप वहां देश में नए अहमदियों के प्रभारी थे। अल्लाह तआला ने आप को धैर्य, सम्मान और दूसरों से बातचीत करने और उन्हें समझाने का विशेष गुण दिया हुआ था। अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता में डूबे हुए थे। खिलाफत से भी अपार प्रेम रखने वाले थे। पांच साल पहले उन्होंने एक अहमदी महिला से शादी की थी अब मृत्यु के समय विधवा के अतिरिक्त चार वर्षीय बेटा ज़ैनब और दो वर्षीय बेटा मुहम्मद यादगार छोड़े हैं उनका बेटा माशाअल्लाह वाक्फ नौ में शामिल है। अल्लाह तआला उनसे माफी और दया का व्यवहार करे उनके दर्जे बुलंद करे और उनकी पत्नी और बच्चों का भी खुद ही संरक्षक हो और उन्हें भी उन की नेकियाँ जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बदगुमानी (कुधारणा) के बारे में फरमाते हैं- तुम देख कर भी बद को बचो बदगुमान से डरते रहो इक्राबे खुदाए जहान से शायद तुम्हारी आँख ही कर जाए कुछ ख़ता शायद वह बद न हो जो तुम्हें है वह बदनुमा शायद तुम्हारी फहम का ही कुछ क्रसूर हो शायद वह आजमाइशे रब्बे गफूर हो फिर तुम तो बदगुमानी से अपनी हुए हलाक खुद सर पे अपने ले लिया ख़श्मे खुदाए पाक

(बराहीन-ए-अहमदिया भाग-5 रूहानी खज़ायन भाग 21 पृष्ठ 18-19)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफतुल मसीह अल्खामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -3)

जब लोग हमें जानते हैं और हमारा परिचय हो जाता है तो हमारा काम आसान हो जाता है क्योंकि हर व्यक्ति को शांति पसंद है और जब लोग देखते हैं कि हम शांतिप्रिय लोग हैं तो वे हमारी ओर आते हैं।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: फ़रहत अहमद आचार्य)

रेडियो चैनल SWR 4 की पत्रकार का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू

*रेडियो चैनल SWR 4 की पत्रकार ने हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू लिया। पत्रकार के मस्जिदों के निर्माण के संदर्भ में एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: जहाँ पर भी हमारी जमाअत है हम मस्जिद बनाने की कोशिश करते हैं। जहाँ भी क्षेत्र परिषद, अधिकारीगण अनुमति दें तो हमारी इच्छा होती है कि हम मस्जिद बनाएँ और हम मस्जिद निर्माण के लिए उपयुक्त और उचित जगह भी देखते हैं। हम बहुत शांतिप्रिय लोग हैं।

*पत्रकार ने सवाल किया कि क्या आपका काम अधिक आसान होता जा रहा है या अधिक कठिन? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया: जब लोग हमें जानते हैं और हमारा परिचय हो जाता है तो हमारा काम आसान हो जाता है क्योंकि हर व्यक्ति को शांति पसंद है और लोग देखते हैं कि हम शांतिप्रिय लोग हैं तो वे हमारी ओर आते हैं।

*पत्रकार ने सवाल किया कि क्या आप कल भी किसी मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इंशा अल्लाहुल अज़ीज़।

उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लजना की मार्कि में गए जहाँ महिलाओं ने शरफ़ ज़ियारत प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने प्रेमपूर्वक बच्चों को चॉकलेट प्रदान कीं। इस कार्यक्रम के पूरा होने के बाद आठ बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर वापस होटल आ गए। इसके बाद आठ बजकर पचास मिनट पर हुज़ूर अनवर ने "मस्जिद बैतुल आफ्रियत" तशरीफ़ लाकर नमाज़ मगरिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों के बाद हुज़ूर अनवर वापस अपने आवास पर तशरीफ़ ले गए।

मेहमानों के तास्सुरात (भाव)

आज इस मस्जिद के इस उद्घाटन समारोह में शामिल होने वाले कुछ मेहमानों ने अपने भाव और दिल की भावनाओं को व्यक्त किया कि खलीफतुल मसीह के भाषण ने उनके दिलों पर गहरा असर किया है। कुछ मेहमानों के भाव निम्न हैं:

*प्रोटस्टंट चर्च के पादरी Stockburger साहब जिन्होंने अपना भाषण भी पेश किया था, हुज़ूर अनवर के भाषण के बाद अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: खलीफतुल मसीह ने जो रूह आज हम में पैदा करने की कोशिश की है, मेरी यह इच्छा है कि जहाँ कहीं भी आप जाएं उसी रूह का विस्तार करें जिसके द्वारा अंततः सारी दुनिया में शांति फैल जाएगी।

* Basel नगर से एक डॉक्टर मस्जिद के उद्घाटन समारोह में शामिल हुए। महोदय कहने लगे कि मेरी सारी ज़िन्दगी यह तलाश रही कि मुझे शांतिप्रिय मुसलमान कहीं मिल जाएं। आज आप लोगों ने मेरी इस इच्छा को पूरा कर दिया है। मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली महसूस कर रहा हूँ। आज मुझे यह लोग मिल गए हैं।

*एक महिला जिसका संबंध Catholic चर्च से है, कहने लगीं कि खलीफा के चेहरे पर स्थायी मुस्कान है और प्यार झलक रहा है। मुझे खलीफा के चेहरे में खुदा नज़र आता है।

*इटली से संबंध रखने वाली एक लड़की अपने दोस्त के साथ इस

कार्यक्रम में शामिल हुई। लड़की ने बताया कि मेरा दोस्त इस कार्यक्रम में शामिल होने से घबरा रहा था क्योंकि इस्लाम के बारे में उसकी नकारात्मक भावनाएं थीं लेकिन कार्यक्रम में शामिल होने और हुज़ूर अनवर का भाषण सुनने के बाद उसकी इस्लाम के बारे में विचारधारा बिल्कुल बदल गई। यहां तक कि उसने तुरंत अपने मोबाइल से अपने किसी दूसरे मुसलमान दोस्त को message किया कि आज मुझे पता लगा कि तुम्हारा धर्म कितना सुंदर है।

*एक अल्बानियन परिवार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि खलीफतुल मसीह के भाषण का एक एक शब्द सच था और समय की आवश्यकताओं के अनुसार था। हमें शामिल हो कर बड़ी खुशी हुई।

*एक छात्र ने कहा खलीफतुल मसीह के भाषण ने मेरे दिल पर गहरा असर किया है। मेरे कई दोस्त मुसलमान हैं लेकिन आज इस्लाम और उसकी शिक्षाओं की बिल्कुल अलग तस्वीर लेकर जा रहा हूँ।

*एक अतिथि कहने लगे कि मुझे हुज़ूर अनवर के व्यक्तित्व और भाषण ने बहुत प्रभावित किया है। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी कि हुज़ूर अनवर ने दूसरे वक्ताओं के भाषण से उनकी बातें लीं और फिर उन पर अपने विचार व्यक्त किए जबकि Pope साहब ऐसा नहीं करते।

*चर्च की एक महिला प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर के भाषण के बाद बार-बार हुज़ूर अनवर की ओर इशारा करतीं और कहतीं कि खलीफतुल मसीह के चेहरा से रूहानियत प्रकट हो रही है। खलीफतुल मसीह का भाषण हम सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

*बोज़निया से संबंध रखने वाली तीन पढ़ी लिखी महिलाएं आज के इस समारोह में शामिल हुईं। अपने भाव व्यक्त करते हुए कहने लगीं कि आज का कार्यक्रम मौजूदा कठिन परिस्थितियों में शांति की स्थापना के लिए एक दीपक की हैसियत रखता है। खलीफा का भाषण अद्भुत था जिसमें आपने प्यार और पड़ोसियों के अधिकार पूर्ण करने की ताकीद की। हमारे अपने अहमदी पड़ोसियों के साथ बहुत अच्छे संबंध हैं। स्थानीय जमाअत की कम संख्या होने के बावजूद यह कार्यक्रम बहुत ही संगठित था।

*एक अतिथि Toni साहब कहने लगे कि खलीफा की बातचीत की शैली पर मेरी नज़र रही। मैंने आपकी आवाज को नरम महसूस किया और आपके व्यक्तित्व को Dialogue के खोजकर्ता पाया।

*प्रोटस्टंट चर्च की एक महिला कहने लगीं कि जब पादरी साहब ने भाषण दिया और अच्छी बातें कीं लेकिन इतना लंबा कर दिया कि मेरे दिल में इच्छा पैदा हुई कि अब यह चुप हो जाए। फिर उसके बाद जब खलीफतुल मसीह आए तो मैंने सोचा कि भाषण अधिक लंबा न करें। लेकिन जब खलीफतुल मसीह ने बात शुरू की तो इतना अधिक आनंद आया और दिल पर असर हुआ कि दिल ने चाहा कि अब यह अपना भाषण समाप्त न करें। खलीफा ने बहुत धीमे तरीके से प्यार के साथ शांति का संदेश दिया है।

*एक अतिथि महिला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, मैं शुक्रिया अदा करती हूँ कि मुझे आज इस समारोह में शामिल होने का मौका मिला है। मेरे बच्चों की अहमदी बच्चों से दोस्ती है। जब से उनकी अहमदी बच्चों से दोस्ती है मैंने उन में एक सकारात्मक और अच्छा बदलाव देखा है। इसलिए मैं जानना चाहती थी कि आपकी शिक्षा क्या है, आज यहाँ आने के बाद मुझे पता लग गया है कि मेरे बच्चे अच्छे दोस्तों के साथ हैं और सुरक्षित हैं। महोदया हुज़ूर

अनवर से मिलीं और कहने लगीं कि मुझे इस बात ने बहुत प्रभावित किया है कि हुज़ूर अनवर मुझे उठकर मिले हैं और मेरा सम्मान किया है, जब कि हुज़ूर अनवर ऊपर मंच पर बैठे थे और मैं नीचे थी। तब भी हुज़ूर अनवर मेरे लिए झुककर खड़े हुए।

*स्कूल के एक शिक्षक Volker Mauch ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि अहमदी बच्चियां मेरे स्कूल में पढ़ती हैं। उनकी वजह से मैं यहाँ आया हूँ। मुझ पर खलीफ़तुल मसीह के भाषण ने जादू करने वाला प्रभाव डाला है। मेरे दिल पर गहरा असर है। खलीफ़तुल मसीह का भाषण बड़ा पुर हिकमत था। आपने पहले वक्ताओं की बातों को ध्यान से सुना और फिर उनका बड़ी खूबी से उत्तर दिया। अक्सर लोग अपना भाषण लिखकर लाते हैं लेकिन खलीफ़तुल मसीह वक्ताओं के भाषण के दौरान नोट्स लेते रहे और फिर यहाँ की समस्याओं का समाधान बड़ी कुशलतापूर्वक प्रस्तुत किया। मैं खुशनसीब हूँ कि आज इस सभा में शामिल हुआ हूँ।

*पुलिस की सीक्रेट एजेंसी के एक सदस्य अपनी पत्नी के साथ आए हुए थे कहने लगे कि खलीफ़ा का आज का भाषण बहुत महत्वपूर्ण था। आज इन परिस्थितियों में ऐसे ही भाषण की जरूरत थी।

*एक पत्रकार कहने लगे कि वह इस बात पर हैरान हैं कि एक छोटी सी जमाअत की छोटी सी मस्जिद के उद्घाटन के लिए इतना बड़ा मुक़ाम रखने वाला व्यक्ति शामिल हुआ है। यह बात आपके खलीफ़ा की शान को बढ़ाती है और उनका अपनी जमाअत से प्यार और स्नेह व्यक्त होता है।

*एक महिला अतिथि ने बताया कि मैंने खलीफ़ा में विनम्रता ही देखा है। आपके भाषण में दैनिक संबंधित बातें अच्छी महसूस कीं। मैं इस बात से भी बहुत प्रभावित हुई हूँ कि मुझे बतौर ईसाई इस्लाम से परिचित करवाया गया और व्यापक जानकारी बहम पहुंचाई गई।

*एक अतिथि Mr. Bernd ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हुज़ूर अनवर ने विभिन्न पहलुओं से प्रेम की शिक्षा पर प्रकाश डाला है। आपका व्यक्तित्व प्यार से भरा हुआ मालूम होता है और ऐसी जमाअत शांतिपूर्ण ही हो सकती है। महोदय ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि हुज़ूर अनवर को अपनी शांतिपूर्ण शिक्षाओं के कारण विरोधियों का डर नहीं जो आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

*एक महिला जो Religion Teacher थीं, उनका और उनके पति का कहना था कि आज उन्होंने खलीफ़ा का भाषण सुना है। उन्होंने वास्तविक खिलाफ़त का प्यार महसूस किया है।

*लगभग आठ व्यक्ति जिनका संबंध Kindergarten से था, इस कार्यक्रम में शामिल हुए। सभी ने इस बात पर बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया कि इतना बड़ा रुतबा रखने वाली हस्ती एक छोटी सी जमाअत के कार्यक्रम में शामिल हुई है। एक महिला ने बताया कि इस्लाम पर चरमपंथ की जो आपत्ति जताई जाती है वह इससे सहमत नहीं क्योंकि बाइबल में इससे कई गुना अधिक सख्ती पाई जाती है।

*एक अतिथि पुरुष ने कहा कि माननीय खलीफ़तुल मसीह की बढ़ाई आपकी विनम्रता में नज़र आती है। आपके बयान भी शानदार थे और आपने इस्लाम की शांतिप्रियता की जो तस्वीर पेश की उसके द्वारा मुझ पर इस्लाम के नए अर्थ खुले।

*एक अतिथि पुरुष ने कहा कि मेरे भाव सकारात्मक हैं और माननीय खलीफ़तुल मसीह ने जो यह कहा कि प्यार, मुहब्बत और भाईचारे की बहुत जरूरत है यह बात मुझे बहुत पसंद आई और समस्याएँ समाप्त करने के लिए आपने बहुत अच्छे बिंदु बताए हैं।

*एक महिला अतिथि ने कहा कि माननीय खलीफ़तुल मसीह ने जो यह कहा कि हम एक ही पैदा करने वाले खुदा की सृष्टि हैं यह बिल्कुल सही बात है और मुझे बहुत पसंद आई। इससे शांति स्थापित हो सकती है।

*एक अतिथि पुरुष ने कहा मुझे पता नहीं था कि यहाँ क्या होने वाला है, लेकिन मुझे सब बहुत पसंद आया है और मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ हूँ यह माननीय खलीफ़तुल मसीह ने किस विशेष भावना के साथ आज बात

की है और केवल यही नहीं कि बात की, बल्कि लगता था कि यह व्यक्ति जो कह रहा है उसका जीवन जीती जागती मिसाल भी है और यह रूह जो आपके अंदर है इतनी शक्तिशाली है कि यह आप के आसपास के लोगों में स्थानांतरित हो जाती है। मैंने आज खलीफ़तुल मसीह की उपस्थिति से बहुत लाभ प्राप्त किया है।

*एक अतिथि पुरुष ने कहा कि माननीय खलीफ़तुल मसीह का बहुत अच्छा और मानव प्रेम से पूर्ण प्रभाव मुझ पर हुआ बल्कि यहाँ आपकी महफ़िल से मुझे भी कुछ बरकतों को समेटने का मौका मिला और यहाँ आना मेरे लिए सम्मान की बात है, यदि मैं आज यहाँ नहीं आता तो वास्तव में बहुत बड़ी चीज़ से वंचित रह जाता। जमाअत अहमदिया द्वारा मुझे वास्तविक इस्लाम का वास्तविक परिचय मिला जो टीवी के घृणा और हिंसा वाले इस्लाम के बिल्कुल विपरीत है और यहाँ से मुझे शांति और प्यार मिला है और केवल यह नहीं कि शाब्दिक शांति और प्यार मिला बल्कि व्यावहारिक रूप से भी यहाँ ऐसे लोग मिले हैं जो घृणा नहीं चाहते।

*एक अतिथि पुरुष ने कहा कि आज तक मैं सोचता था कि हम एक खुदा को मानते हैं लेकिन विभिन्न धर्मों ने अलग रास्ते दिखाए। लेकिन आज यहाँ आकर मुझे मालूम हुआ कि धर्मों ने तो बड़े संयुक्त रास्ते बताए हैं न कि इतने अलग। और माननीय खलीफ़तुल मसीह ने इस बात का बड़ी खूबसूरती से उल्लेख किया। मुझे यह बात बहुत पसंद आई कि माननीय खलीफ़तुल मसीह ने बड़े स्पष्ट रूप से शेष हिंसक मुसलमान और आई एस आदि से दूरी का इज़हार किया और हमें बताया कि उनका इस्लामी शिक्षा से कोई संबंध नहीं है और तथ्य यही है कि अल्लाह के नाम पर जो दुर्भाग्यपूर्ण कार्य दुनिया में हो रहे हैं इसमें आप लोगों का कोई दोष नहीं बल्कि उनका है जो शिक्षा को गलत बताते हैं और जैसा कि माननीय खलीफ़तुल मसीह ने कहा हम सबका काम है कि प्यार और भाईचारे से फितने के खिलाफ खड़े हों।

*एक महिला अतिथि ने कहा कि आज इस कार्यक्रम की बहुत व्यवस्थित तौर पर तैयारी थी और जो आध्यात्मिक और भौतिक भोजन यहाँ मिला वह बहुत स्वादिष्ट था।

*एक अतिथि पुरुष ने कहा कि माननीय खलीफ़तुल मसीह का यह संदेश शांति-प्राप्ति के हवाले से सही है कि किसी व्यक्ति का खुदा पर विश्वास नहीं हो सकता अगर वह हत्या भी करे क्योंकि एक दृष्टिकोण से किसी मासूम को मारने का मतलब है कि अपने खुदा पर विश्वास को भी क्रतल किया जा रहा है।

(शेष.....)

(फ़रहत अहमद आचार्य)

☆ ☆ ☆

विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि खुदा तआला के भेजे हुए अवतारों का सम्मान किया जाए

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब इमाम जमाअत अहमदिया फरमाते हैं-

अतः यह सिद्धान्त नितान्त प्रिय, शान्तिदायक तथा मैत्री की नींव डालने वाला और नैतिक अवस्थाओं का सहायक है कि हम उन समस्त नबियों को सच्चा समझ लें जो संसार में आए। चाहे वे हिन्दुस्तान में प्रकट हुए, या फारस में या चीन में या किसी अन्य देश में और खुदा ने करोड़ों हृदयों में उनकी श्रेष्ठता एवं सम्मान स्थापित कर दिया तथा उनके धर्म की जड़ सुदृढ़ कर दी तथा कई शताब्दियों तक वह धर्म चला आया। यही सिद्धान्त है जिसकी पवित्र कुर्आन ने हमें शिक्षा दी। इसी सिद्धान्त के अनुसार हम प्रत्येक धर्म के पेशवा को जिन के जीवन-चरित्र इस परिभाषा के अन्तर्गत आ गए हैं सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, यद्यपि वे हिन्दुओं के धर्म के पेशवा हों या पारसियों के धर्म के या चीनियों के धर्म के या यहूदियों के धर्म के या ईसाइयों के धर्म के।

(इस्लाम और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पृष्ठ-11-12)

पृष्ठ 2 का शेष

जाए और अल्लाह अकबर चौतीस बार पढ़ा जाए (तिर्मिजी किताबुल दावात) यह जिक्र कई तरीके पर रिवायत है। लेकिन सबसे उचित तरीका यही है अलग अलग पहले दोनों वाक्य को तैंतीस-तैंतीस बार कहे और तीसरे को चौतीस बार। नमाज़ के बाद का समय जिक्र के लिए बहुत ही उच्च दर्जा का है उस समय ज़रूर जिक्र करना चाहिए। कुछ लोग मुझे और हज़रत मौलवी साहिब खलीफतुल मसीह अव्वल और हज़रत मसीह मौऊद ³¹ को देखकर शायद समझते हों कि यह नमाज़ के बाद जिक्र नहीं करते। उन्हें पता होना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत खलीफतुल मसीह अव्वल भी जिक्र किया करते थे और मैं भी करता हूँ, हाँ जोर से न वह कहते थे और न मैं। मैं दिल में करता हूँ। अतः नमाज़ के बाद ज़रूर जिक्र करना चाहिए।

जिक्र से संबंधित कुछ अन्य सावधानियां भी हैं और वह यह कि सिवाय उन मौकों के जो हदीस से प्रमाणित हैं मज्लिस में जोर से जिक्र न किया जाए। कई बार इस तरह अहंकार पैदा हो जाता है। कई बार अन्य लोगों को जिक्र करने या नमाज़ पढ़ने में तकलीफ होती है। फिर भी याद रखना चाहिए कि जो बात नई धारण की जाए वह बोझिल मालूम होती है। और इसके करने से दिल घबराता है यही कारण है कि कुछ लोग कहते हैं कि जिक्र में दिल नहीं लगता। लेकिन क्या एक ही दिन में कोई व्यक्ति किसी कला में पूर्ण हो जाता है? हरगिज़ नहीं बल्कि धीरे धीरे और कुछ अवधि के बाद ऐसा होता है। अतः अगर शुरुआत में किसी का दिल न लगे और उसे बोझ सा मालूम हो तो वह घबराए नहीं। धीरे धीरे दिल स्वीकार कर लेगा लेकिन शर्त यह है कि जिक्र को बनाए रखा जाए। फिर कुछ लोग कहते हैं कि हमें जिक्र करने में आनन्द भी आ जाता है मगर उन्हें चाहिए कि नपस के लिए आनन्द न तलाश करें। और जिक्र करने की समय यह इरादा न हो कि सुख प्राप्त हो बल्कि इबादत समझ कर करना चाहिए। क्योंकि आनंद मूल चीज़ नहीं है मूल चीज़ इबादत है और इबादत तभी स्वीकार होती है जबकि इबादत समझ कर की जाए।

फिर कुछ लोग कहते हैं कि हमें जिक्र करने के लिए कुछ दिन तो कब्ज़ रहती है और कुछ दिन तबीयत खुल जाती ऐसे लोगों को भी घबराना नहीं चाहिए। कब्ज़ सभी प्रकार के लोगों को होती है। एक बार एक सहाबी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आ कर कहा कि हुज़ूर मैं मुनाफ़िक हूँ। आप ने फरमाया नहीं तुम तो मुसलमान हो। उस ने कहा हुज़ूर जब आप के सामने आता हूँ तो जन्नत और जहन्नम मेरी आँखों के सामने आ जाते हैं और जब घर जाता हूँ तो फिर वह स्थिति स्थिर नहीं रहती। आप ने फरमाया अगर वही स्थिति हर समय बनी रहे तो मर जाओ। (मुस्लिम किताबुल तौब:) मूल बात यह है कि अगर हर समय एक ही स्थिति रहे तो फिर बढ़ने और विकसित करने की शक्ति छिन जाती है। इसलिए अल्लाह तआला कभी तो मूल स्थिति से नीचे कर देता है ताकि व्यक्ति कूद कर पहले से भी आगे बढ़ जाए। और कभी ऊपर चढ़ा देता है। हाँ कब्ज़ संबंधित एक विशेष बात याद रखनी चाहिए और वह यह है कि एक कब्ज़ अच्छी होती है और एक बुरी। और इन का पता इस तरह लग सकता है कि जिक्र के बारे में आनंद आने का एक दर्जा तय कर लिया जाए जैसे एक स्तर है इस से ऊपर 2,3 4,5 स्तर हैं। अब अगर कोई व्यक्ति दो स्तर पर है। और कब्ज़ उसे ले जाती है पहले स्तर पर तो समझना चाहिए कि इनाम दिलाने वाली कब्ज़ है। लेकिन अगर तीन दर्जा पर हो और फिर कब्ज़ हो तो देखना चाहिए कि अब कब्ज़ दो दर्जा पर ले गई है या एक दर्जा पर या बिल्कुल शून्य पर। अगर दो स्तर पर हो तो समझना चाहिए अब कब्ज़ दो स्तर पर ले गई है। यदि दो स्तर पर हो तो समझना चाहिए कि तरक्की दिलाने वाली है और अगर एक या शून्य के दर्जा पर हो तो खतरे का स्थान है इसके लिए विशेष प्रयास और कोशिश करनी चाहिए।

जिक्रे नमाज़:

अब मैं नमाज़ के बारे में बताता हूँ। यह सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण जिक्र है क्योंकि इसमें कभी व्यक्ति खड़ा होकर जिक्र करता है और कभी रुकूअ में, कभी सिज्दे में, कभी बैठकर, फिर नमाज़ में कुरआन पढ़ता है और इसके अतिरिक्त और जिक्र भी करता है। अतः नमाज़ सब जिक्रों में जामेअ है। पहले मैंने इस के बारे में वर्णन इस लिए छोड़ दिया था कि बहुत व्याख्या चाहती है। लेकिन अब वर्णन करता हूँ।

नमाज़ के तीन हिस्से हैं (1) फर्ज़ (2) सुन्नत (3) नफिल। फर्ज़ और सुन्नत तो सब लोग अदा करते हैं बाकी रहे नफल उनके अदा करने में प्रायः सुस्ती करते हैं। सुन्नतों से संबंधित तो याद रखना चाहिए कि वह इसलिए निर्धारित की गई हैं कि

फर्ज़ों के अदा करने में जो कमी या त्रुटि रह जाए उसे पूरा कर दें। क्योंकि अल्लाह तआला घटिया नमाज़ स्वीकार नहीं करता बल्कि पूर्ण स्वीकार करता है। और अगर त्रुटि हो तो सुन्नत पूरा करती है जैसे किसी ने नमाज़ पढ़ी मगर एक रकअत में उस का ध्यान स्थापित न रहा और विभिन्न प्रकार की शंकाएँ उत्पन्न होती रहीं इसलिए वह रकअत स्वीकार न होगी। इस के बदला में सुन्नतें रख दी जाएँगी ताकि नमाज़ पूरी हो। रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) चूँकि इंसान के हृदय की स्थिति को ख़ूब जानते थे और समझते थे इसलिए आप ने फर्ज़ों के साथ सुन्नतें अपनी ओर से लगा दीं ताकि फर्ज़ों की कमी पूरा कर दें और यह आप ने अपनी उम्मत पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

नफल की फज़ीलत

अब नफल शेष रहे वे अल्लाह तआला की निकटता का माध्यम होते हैं। अर्थात् मुक्ति के अतिरिक्त उच्च स्तर प्राप्त करने का कारण बनते हैं। तो जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की निकटता चाहता है उसके लिए आवश्यक है कि नफल पढ़ने पर बहुत जोर दे। फिर नफल भी कई प्रकार के होते हैं। कुछ दिन में पढ़े जाते हैं कुछ रात में। जो रात में पढ़े जाते हैं उनको तहज्जुद कहते हैं और यह अधिक महत्वपूर्ण होते हैं और ऐसे उत्तम कि अल्लाह तआला ने कुरआन में इनकी बरकतें ऐसे वर्णन की है-

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلاً

(अलमुजम्मिल: 6) कि इंसान के नपस को ठीक करने के लिए रात का उठना बहुत बड़ा माध्यम है। तो अगर कोई व्यक्ति अनुभव करके देखेगा तो उसे पता चल जाएगा कि किस तरह नपस का बहुत बड़ा व्यापक सुधार हो जाता है और विशेष बल और शक्ति प्राप्त होती है सहाबा किराम इन पर विशेष रूप से निरन्तरता रखते थे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन नफलों का इतना ख्याल था कि बावजूद उनके नफिल होने के आप रात को फिर कर देखते कि सहाबा में से कौन यह नफिल पढ़ता है और कौन नहीं पढ़ता। एक बार आप की मज्लिस में अब्दुल्ला बिन उमर का वर्णन आया कि वह बहुत अच्छा है उसमें यह यह ख़ूबी है, यह गुण है तो आपने फरमाया कि हाँ बड़ा अच्छा है बशर्ते कि तहज्जुद पढ़े (बुखारी किताबुल तहज्जुद) चूँकि अब्दुल्ला बिन उमर युवा थे और तहज्जुद पढ़ने में सुस्ती करते थे इसलिए आपने इस तरह उन्हें इस ओर ध्यान दिलाया। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का उस पति पत्नी पर रहम हो कि अगर रात पति की आंख खुले तो उठकर तहज्जुद पढ़े और पत्नी को जगाए कि तू भी उठकर तहज्जुद पढ़। और अगर पत्नी न जागे तो पानी के छींटे उसके मुँह पर मारे और जगाए। इसी तरह अगर पत्नी की आंख खुले तो वह भी ऐसा ही करे कि खुद तहज्जुद पढ़े और मियां को जगाए अगर वह न जागे तो उसके मुँह पर छींटे मारे (मिशक़ात किताबुल बियूअ) देखो एक तरफ तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पत्नी के लिए पति का सम्मान बहुत ज़रूरी करार दिया है और दूसरी तरफ तहज्जुद के लिए जगाने के लिए अगर पानी के छींटे भी मारना पड़े तो भी वैध रखा है। मानो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तहज्जुद को इस कदर ज़रूरी समझते थे। यह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से है। फिर कुरआन कहता है कि रात का उठना नपस को सीधा कर देता है। यही कारण है कि रसूले करीम ने सहाबा से कहा कि चाहे तहज्जुद दो रकअत ही पढ़ो लेकिन पढ़ो ज़रूर। फिर हदीसों से यह भी साबित होता है कि रात के अंतिम भाग में अल्लाह तआला करीब आ जाता है और बहुत ज़्यादा दुआएं स्वीकार करता है इसलिए तहज्जुद पढ़ना बहुत ज़रूरी और बहुत फायदेमंद है।

तहज्जुद के लिए उठने के तेरह तरीके:

अब सवाल यह है कि तहज्जुद पढ़नी तो ज़रूर चाहिए लेकिन रात को उठें कैसे? इसका एक छोटा तरीका पहले बताता हूँ। हालांकि इसमें नुकसान भी है लेकिन लाभ भी हो सकता है और वह यह है कि आजकल अलार्म वाली घड़ियां मिल सकती हैं उनके द्वारा मनुष्य जाग सकता है। लेकिन मेरा अनुभव है कि यह कोई ऐसा उपयोगी तरीका नहीं है। कारण यह है कि चूँकि मनुष्य को भरोसा हो जाता है कि वह मुझे समय से जगा देगी इसलिए रात को उठने की नेकी की तरफ जो तवज्जो और विचार होना चाहिए वह उसे नहीं होता। अगर उसे उठने का विचार होता और इसी विचार में ही उसकी आंख लग जाती तो मानो वह सारी रात इबादत करता रहता। इसके अतिरिक्त कभी ऐसा भी होता है कि अगर उठने को जी न चाहे तो व्यक्ति बजते बजते अलार्म को बंद कर देता है। लेकिन अगर नीयत और इरादे से सोएगा तो समय पर ज़रूर उठ खड़ा होगा। फिर ऐसे लोग जो घड़ी द्वारा उठते हैं वे इस बात की शिकायत करते हैं कि नमाज़ में नींद आती है। इसकी भी वजह यही है

कि वह घड़ी से उठते हैं न कि अपने तौर से इसलिए यह तरीका कोई उपयोगी नहीं है। हाँ प्रारंभिक अवस्था के लिए या किसी विशेष ज़रूरत के समय उपयोगी होता है।

मेरे निकट वे तरीके जिनसे रात उठने में मदद मिल सकती है तेरह हैं। यदि कोई व्यक्ति उन पर अमल करे तो मैं विश्वास रखता हूँ कि अल्लाह तआला के फज़ल से उसे ज़रूर सफलता होगी। शुरू में तो हर काम में परेशानी होती है लेकिन अन्ततः ज़रूर उनके द्वारा सफलता होगी। यह सब बातें जो मैं बयान करूँगा वह कुरआन और हदीस से ही समायोजन हुई बयान करूँगा न कि अपनी ओर से। लेकिन यह ख़ुदा तआला ने मुझ पर विशेष कृपा की है कि ये बातें मुझ पर ही खोली गई हैं। और दूसरों से छिपी रही हैं। अगर समय तंग न होता तो मैं कुरआन की वे आयतें और हदीसों भी बयान करता जिनसे मैंने उद्धृत की हैं लेकिन अब केवल परिणाम ही बयान करूँगा।

पहला तरीका

यह है कि अल्लाह तआला ने प्रकृति में यह नियम रखा है कि जिस समय कोई चीज़ पैदा हुई हो वही जब दूसरी बार आए तो इस चीज़ में फिर जोश पैदा हो जाता है। इस के उदाहरण बहुत मिल सकते हैं। जैसे इंसान को जो बीमारी बचपन में हुई हो वही बीमारी बुढ़ापे में जबकि बचपन जैसी स्थिति हो जाती है लौट आया करती है। यही बात पेड़ों और पक्षियों में पाई जाती है। इस नियम से रात में उठने में इस तरह मदद मिल सकती है कि इशा की नमाज़ पढ़ने के बाद कुछ समय जिक्र कर ले। इसका यह फायदा होगा कि जितना समय वह जिक्र करेगा सुबह उतना ही पहले उसकी आंख जिक्र करने के लिए खुल जाएगी।

दूसरा तरीका

यह है कि इशा की नमाज़ पढ़ लेने के बाद किसी से बात न करे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इशा की नमाज़ पढ़ने के बाद बात करने से रोका है। यद्यपि यह भी साबित होता है कि कई बार आप कलाम करते रहे हैं। लेकिन आमतौर पर अपने मना फरमाया है। इसका कारण यह है कि अगर इशा की नमाज़ के बाद बातें शुरू कर दी जाएगी तो व्यक्ति अधिक जागेगा और सुबह देर करके उठेगा और दूसरे यह कि अगर वे बातें मज़हबी और धार्मिक न होंगी तो उनकी वजह से ध्यान धर्म से हट जाएगा। इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इशा की नमाज़ के बाद बिना बात किए सो जाना चाहिए ताकि धार्मिक विचारों पर ही आंख लगे और जल्दी खुल जाए। दफ़्तर के काम या और कोई आवश्यक कार्य इशा की नमाज़ के बाद मना नहीं। लेकिन यह आवश्यक है कि सोने से पहले जिक्र कर ले। यह दूसरा तरीका है।

तीसरा तरीका

यह है कि जब कोई इशा की नमाज़ पढ़कर आए और सोने लगे तो चाहे उसका वजू ही है तो भी ताज़ा वजू करके चारपाई पर लेटे। इसका असर दिल पर पड़ता है और विशेष प्रकार की ताज़गी पैदा होती है और जब कोई ताज़ा वजू के कारण ताज़गी की स्थिति में सोएगा तो वह आंख खुलते समय भी ताज़गी में ही होगा। आमतौर पर यह देखा गया है कि अगर कोई रोता सोए तो वह चीख मार कर उठ बैठता है। और अगर हंसता सोए तो उठते समय भी उसका चेहरा खिला हुआ होता है उसी तरह जो वजू करके ताज़गी से सोता है वह उठता भी ताज़गी से ही है। और इस तरह उसे उठने में मदद मिलती है।

चौथा तरीका

यह है कि जब सोने लगे तो कोई जिक्र करके सोए। इसका नतीजा यह होगा कि रात जिक्र करने के लिए फिर उसकी आंख खुल जाएगी। यही कारण है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सोने से पहले यह जिक्र किया करते थे। आयतल कुर्सी, फिर तीनों कुल एक बार पढ़ कर अपने हाथों में फूंकते और हाथ सारे शरीर पर फेरते और ऐसा तीन बार करते थे और फिर दाईं ओर मुंह करके यह जिक्र पढ़ते-

اللَّهُمَّ اسَلِّمْ نَفْسِي إِلَيْكَ وَوَجِّهْهُتْ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوِّضْهُتْ
أَمْرِي إِلَيْكَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، وَالْجَاهُتْ ظَهْرِي إِلَيْكَ لَا مَلْجَأَ وَلَا
مَنْجِي إِلَّا إِلَيْكَ، أَمْنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتْ، وَنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتْ

(तिर्मिज़ी किताबुद्दअवात) इसी तरह प्रत्येक मोमिन को चाहिए। और फिर चारपाई पर लेटकर दिल में سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ या कोई अन्य जिक्र जारी रखना चाहिए। यहां तक कि इस हालत में आंख लग जाए। क्योंकि जिस हालत में व्यक्ति सोता है आमतौर पर वही स्थिति सारी रात उस

पर गुज़रती है। इसलिए जो व्यक्ति तस्बीह और तहमीद करते हुए सोएगा मानो सारी रात इसी में लगा रहेगा। देखो महिलाएं या बच्चे अगर किसी दुःख और पीड़ा में सोएं तो सोते सोते जब करवट बदलती हैं दर्दनाक और गमगीन आवाज़ निकालते हैं क्योंकि इस गम का जो सोते समय उन्हें था उन पर असर होता है। लेकिन अगर कोई तस्बीह करते हुए सोएगा तो जब करवट बदलेगा उसके मुंह से तस्बीह की आवाज़ ही निकलेगी। यही कारण है कि कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि मोमिन वह होते हैं कि

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ

(अस्सिजदा: 17) अर्थात उनके पहलू बिस्तरों से उठे रहते हैं और वे भय और प्रलोभन से अल्लाह को पुकारते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उससे खर्च करते हैं। ज़ाहिर में तो यह बात सही नहीं लगती क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सोते थे और दूसरे सब मोमिन भी सोते हैं लेकिन मूल बात यह है कि चूंकि तस्बीह करते सोते हैं इसलिए उनकी नींद नींद नहीं होती बल्कि तस्बीह ही होती है और हालांकि वे सोते हैं लेकिन वास्तव में सोते नहीं। उनकी कमरों बिस्तरों से अलग रहती हैं और वह ख़ुदा की याद में संलग्न रहते हैं।

पांचवां तरीका

यह है कि सोने के समय सही इरादा कर लिया जाए कि तहज्जुद के लिए ज़रूर उठूंगा। इंसान के अंदर अल्लाह तआला ने यह शक्ति रखी है कि जब वह ज़ोर से अपने नपस को कोई आदेश करता है तो वह स्वीकार कर लेता है और यह एक ऐसी बात है जो सभी बुद्धिमान स्वीकार करते आए हैं। अतः तुम सोने के समय पक्का इरादा कर लो कि तहज्जुद के समय ज़रूर उठेंगे। ऐसे में यद्यपि तुम सो जाओगे लेकिन तुम्हारी रूह जागती रहेगी कि मुझे आदेश मिला है कि अमुक समय जगाना है और ठीक समय पर अपने आप तुम्हारी आंख खुल जाएगी।

छठा तरीका

ऐसा है कि जिस के करने की केवल ऐसे ही व्यक्ति को अनुमति देता हूँ जो यह देखता है कि मेरा ईमान ख़ूब मज़बूत है और वह यह कि वितरों को इशा की नमाज़ के साथ न पढ़े बल्कि तहज्जुद के समय पढ़ने के लिए रहने दे। आमतौर पर यह बात पाई जाती है कि व्यक्ति फज़्र को खास तौर से निभाता है मगर नफल में सुस्ती कर जाता है। अतः जब नफलों के साथ वाजिब मिल जाएंगे तो उसकी रूह कभी आराम नहीं करेगी जब तक कि उसे अदा न करे और इसका नतीजा यह होगा कि नपस सुस्ती नहीं करेगा। लेकिन अगर वितर पढ़े हुए हैं और तहज्जुद के समय आंख खुल भी जाए तो स्वयं कह देता है कि वितर तो पढ़े हुए हैं नफिल न पढ़े तो न सही। लेकिन जब यह विचार होगा कि वितर भी पढ़ने हैं तो ज़रूर उठेगा तो नफल भी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम निःसंदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क्रसम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूँ। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क्रसम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address: Aiwan-e-Ansar, Mohalla

Ahmediyya, Qadian - 143516, Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

EDITOR SHAIKH MUJAHID AHMAD Editor : +91-9915379255 e-mail : badarqadian@gmail.com www.alislam.org/badr	REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553	MANAGER : NAWAB AHMAD Tel. : +91- 1872-224757 Mobile : +91-94170-20616 e-mail:managerbadrqnd@gmail.com ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-
	The Weekly BADAR Qadian Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol.2 Thursday 27 July 2017 Issue No. 30	

पढ़ लेगा। लेकिन जैसा कि मैंने पहले बताया है उसके लिए शर्त है कि ईमान बहुत मजबूत हो। जब ईमान मजबूत होगा तो वितरों के लिए जरूर उठेगा। अन्यथा वितरों के पढ़ने से भी वंचित रहेगा।

सातवां तरीका

भी उन्हीं लोगों के लिए है जो रूहानियत (अध्यात्म) में बहुत बढ़े हुए हैं और वह यह कि इशा की नमाज के बाद नफिल पढ़ना शुरू कर देते हैं और इतनी देर तक पढ़ें कि नमाज में ही नींद आ जाए और इतनी नींद आए कि सहन न की जा सके उस समय सोए। बावजूद इसके कि इसमें अधिक समय लगेगा लेकिन जल्दी नींद खुल जाएगी यह रूहानी व्यायाम होता है।

आठवां तरीका

वह है जो हमारे सूफिया में रिवाज था। मैंने उसकी जरूरत महसूस नहीं की लेकिन है लाभदायक और वह यह है कि जिन दिनों में अधिक नींद आए और समय पर आंख न खुले उनमें नरम बिस्तर हटा दिया जाए।

नौवां तरीका

यह है कि सोने से कई घंटे पहले खाना खा लिया जाए। अर्थात् मगरिब से पहले या मगरिब की नमाज के बाद तुरंत। बहुत बार ऐसा होता है कि मनुष्य की रूह चुस्त होती है लेकिन शरीर सुस्ती कर देता है। शरीर एक बंधन है जो रूह से चिमटा हुआ है जब यह बंधन भारी हो जाए तो रूह को दबा लेता है। इसलिए सोने के समय पेट भरा नहीं होना चाहिए क्योंकि इसका असर दिल पर बहुत पड़ता है और व्यक्ति को सुस्त कर देता है।

दसवां तरीका

यह है कि जब इंसान रात को सोए तो ऐसी स्थिति में न हो कि जुनबी हो या उसे कोई गंदगी लगी हो। बात यह है कि पवित्रता से फरिश्तों का गहरा संबंध होता है और वे गंदे आदमी के पास नहीं आते बल्कि दूर हट जाते हैं। इसीलिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने जब एक बदबूदार चीज़ कुछ खाने के लिए लाई गई तो आप ने सहाबा से कहा कि तुम खा लो मैं नहीं खाता। सहाबा ने कहा कि हम नहीं खाते। आपने कहा तुम खा लो मेरे साथ तो फरिश्ते बातें करते हैं इसलिए नहीं खाता क्योंकि उन्हें ऐसी चीज़ों से नफरत है।

तो गंदगी को फरिश्ते बहुत नापसंद करते हैं। हजरत खलीफतुल मसीह अब्वल सुनाते थे कि एक बार मैंने खाना खाया और हाथ धोए बिना सो गया। रोया (स्वप्न) में मैंने देखा कि मेरे भाई साहब आए हैं और उन्होंने मुझे कुरआन हकीम देना चाहा लेकिन जब मैं हाथ लगाने लगा तो कहा कि हाथ न लगाना तुम्हारे हाथ साफ नहीं हैं। तो बदन साफ होने का दिल पर बहुत प्रभाव पड़ता है। सफाई की हालत में सोने वाले को फरिश्ते आकर जगा देते हैं लेकिन अगर सफाई में अंतर हो तो पास नहीं आते। यह तरीका शरीर की सफाई के बारे में है।

ग्यारहवां तरीका

यह है कि बिस्तर पाक व साफ हो बहुत लोग इस बात की परवाह नहीं करते लेकिन याद रखना चाहिए कि बिस्तर की पवित्रता का रूहानियत से विशेष संबंध है इसलिए इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

बारहवां तरीका

ऐसा है कि लोगों को इस पर अमल करने की वजह से नुकसान पहुंच सकता है। हाँ विशेष लोगों के लिए हानिकारक नहीं है और वह यह कि पति और पत्नी एक बिस्तर में न सोएँ। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सोते थे लेकिन आपकी शान बहुत ऊंची और बुलंद है। आप पर इसका कोई असर नहीं हो सकता था। लेकिन अन्य लोगों को ध्यान देना चाहिए। बात यह है कि शारीरिक काम वासना का प्रभाव जितना हो उतना ही अध्यात्म को बंद कर देता है। यही कारण है कि शरीरयत इस्लाम ने कहा है कि खाओ पिओ लेकिन सीमा से न बढ़ो। क्यों न बढ़ो, इसलिए कि क्योंकि कामवृत्ति अधिक बढ़कर रूहानियत को नुकसान पहुंचाएगी। तब वे लोग जो अपने नफ्स पर नियंत्रण रखते हैं वे अगर इकट्ठे सोएँ तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन आम लोगों को इससे बचना चाहिए। और वे लोग जिन्हें अपने विचारों पर पूरा पूरा नियंत्रण न हो उन्हें एक साथ नहीं सोना चाहिए। इस तरह उन्हें काम वासना के विचार आते रहेंगे और कई बार ऐसा भी होता है कि सोते सोते संबंध बनाने या प्यार करने लग

जाते हैं इस तरह रूहानियत पर बुरा असर पड़ता है और उठने में सुस्ती हो जाती है।

तेरहवां तरीका

ऐसा उच्च है कि जो न केवल तहज्जुद के लिए उठने में बहुत बड़ी सहायता करने वाला और सहायक है बल्कि उस पर अमल करने से व्यक्ति बदी और बुराइयों से भी बच जाता है और वह यह है कि सोने से पहले देखना चाहिए कि हमारे दिल में किसी के संबंधित वैर या द्वेष तो नहीं है अगर हो तो उसे दिल से निकाल देना चाहिए।

इसका नतीजा यह होगा कि नफ्स के शुद्ध होने की वजह से तहज्जुद के लिए उठने की तौफ़ीक़ मिल जाएगी चाहे इस प्रकार के विचार उन पर भी काबू पा ही लें। लेकिन रात में सोने से पहले जरूर निकाल देने चाहिए और दिल को बिल्कुल खाली कर लेना चाहिए। इसमें हर्ज ही क्या है। अगर कोई ऐसे विचारों में सांसारिक लाभ समझता है तो दिल को कहे कि दिन को फिर याद रख लेना रात में सोने के समय किसी से लड़ाई तो नहीं करनी कि उन्हें दिल में रखा जाए। प्रथमतः तो ऐसा होगा कि अगर एक बार अपने दिल से किसी विचार की जड़ काट दी जाएगी तो फिर वह आएगा ही नहीं। दूसरे इस प्रकार विचार रखने से जो नुकसान पहुंचना होता है उससे व्यक्ति सुरक्षित हो जाता है। यह एक सिद्ध बात है कि एक बात जिस कदर अधिक समय दूसरे के साथ रहती है उतना ही अधिक अपना प्रभाव उस पर करती है। जैसे यदि स्पंज को पानी से भर कर किसी चीज़ पर जल्दी से फेर कर हटा लिया जाए तो वह बहुत थोड़ी गीली होगी। लेकिन अगर देर तक उस पर रखा जाए तो वह बहुत अधिक भीग जाएगी इसी प्रकार जो विचार मनुष्य को देर तक रहें वे उसके दिल में अधिक बस जाते हैं और सोते समय जिन विचारों को इंसान अपने दिल में रखे उन्हें उसकी रूह सारी रात दुहराती रहती है। दिन में अगर कोई ऐसा विचार हो तो वह इतना हानिकारक नहीं होता जितना रात के समय का। क्योंकि उनके दूसरे कामों में संलग्न होने के कारण वह भुला देता है लेकिन रात को बार बार आता है। अतः सोते समय यदि कोई बुरा विचार हो। तो उसे निकाल देना चाहिए ताकि वे दिल में गड़ न जाए। क्योंकि अगर गड़ गया तो फिर उसका निकलना बहुत मुश्किल होगा। फिर अगर रात को जान ही निकल जाए तो इस बुराई के विचार से तौबा करने का मौका भी नहीं मिलता। इस प्रकार नफ्स को डराना चाहिए और जब एक बार विचार निकल जाएगा तो फिर इससे निजात मिल जाएगी। अतः सोते समय नफ्स में बुरे विचार नहीं रहने देने चाहिए। जब इस तरह दिल को शुद्ध व साफ करके कोई सोएगा तो तहज्जुद के समय उठने की उसे जरूर तौफ़ीक़ मिल जाएगी। (शेष.....)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

जमाअत की सेवा के इच्छुक ध्यान दें।

सदर अंजुमन अहमदिया क्रादियान के कुछ निकायों में कार्यकर्ता दर चतुर्थ आसामी भरी जा है। जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में चतुर्थ श्रेणी सेवा के इच्छुक हों वे निम्नलिखित शर्तों के अनुसार आवेदन कर सकते हैं।

(1) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है। (2) उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए। बर्थ सर्टिफिकेट प्रस्तुत करना आवश्यक होगा। (3) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो इंटरव्यू बोर्ड तकरीर कारकुनान में सफल होंगे। (4) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो नूर अस्पताल क्रादियान मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और ठीक होंगे। (5) उम्मीदवार के क्रादियान आवाजाही के सफर खर्च अपने होंगे। (6) अगर किसी उम्मीदवार का चयन होता है तो इस अवस्था में उसे क्रादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। (प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया से लिए जा सकते हैं। इस घोषणा के 2 महीने के अंदर जो आवेदन आएंगे उन पर विचार होगा) (नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क्रादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:

कार्यालय: 01872-501130 मोबाइल: 09815433760

e.mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆